2:11-25

दुःख भोगने वाले परमेश्वर के लोगों के जैसा व्यवहार करना

(भाग 1)

पुराना नियम में अधिकतर राष्ट्रीय परिवेश का स्थान देने के साथ ही साथ इस्राएल के लिए प्रतिज्ञा के देश को भी महत्व दिया गया है, 1 पतरस में मातृभूमि को पाने की निराशा की भावनाओं को प्रकट करने के लिए यह किसी हद तक हैरान करने वाली बात है। अब्राहम कनान देश में एक यात्री था। मसीही देश में गुजर रहे हैं। पतरस ने अपने पाठकों को संसार में परदेशी, संसार में यात्री के रूप में सम्बोधित किया।

"परदेशी और यात्री" (2:11, 12)

[11]हे प्रियो, मैं तुम से विनती करता हूँ कि तुम अपने आप को परदेशी और यात्री जानकर उन सांसारिक अभिलाषाओं से जो आत्मा से युद्ध करती हैं, बचे रहो। [12]अन्यजातियों में तुम्हारा चाल-चलन भला हो; ताकि जिन-जिन बातों में वे तुम्हें कुकर्मी जानकर बदनाम करते हैं, वे तुम्हारे भले कामों को देखकर उन्हीं के कारण कृपा-दृष्टि के दिन परमेश्वर की महिमा करें।

आयत 11. यहां पर पत्री का भाव बदलता है। मसीही होने का अर्थ क्या है अपने पाठकों को यह समझने में सहायता करने के बाद। पतरस ने व्यावहारिक आदेश देना आरम्भ किया जो उनको पत्री के अन्त तक ले जाएगा। मैं तुम से **विनती करता हूँ** उसने कहा। अनैतिकता विशेषकर यौन अनैतिकता जिसने यूनानी-रोमी समाज को अपने जाल में फंसाया हुआ था, मसीहियों पाप से नाता (4:1, 2) तोड़ने में संघर्ष किया जिसकी मसीह के वचन ने मांग की है। शारीरिक इच्छाएँ आसानी से मिटाई नहीं गई थी। पतरस ने उन्हें एक बार फिर स्मरण करवाया कि उनकी नागरिकता इस संसार की नहीं है। वह चाहता था कि वे पहले इस बात को महसूस करें कि वे मानवीय मामलों की सीमाओं पर खड़े हैं, संसार और इसके आचरण के नहीं हो। वे इस संसार में **परदेशी और यात्री** हैं जहाँ वे रह रहे हैं। ऐसा होना सम्भव है कि वे उन लोगों के द्वारा सताए जाएँ जो इस

संसार के हैं। संसार उनसे घृणा कर सकता है परन्तु वे परमेश्वर की, पतरस की और उनके भाइयों बहनों की दृष्टि में वे **प्रिय** हैं।

मसीही "चुने हुए" लोग हैं, वे "प्रिय" लोग हैं, परन्तु "परदेशी" और "यात्री" भी हैं। उनकी मातृभूमि स्वर्ग है। 1:1 में पतरस ने अपने पाठकों को "परदेशी" कहा, परन्तु यही यूनानी शब्द (παρεπίδημος, *पारेपाइडमोस)* जिसे NASB इसी पद में "पराए" अनुवाद करता है। इसी तरह का मिलता जुलता अनुवादित शब्द "पराया" पद 1:17 में "परदेशी होने का समय" लिया गया है। जबकि नया नियम में देश को लेने के मूल भाव महत्वता नहीं है जैसा कि यह पुराना नियम में है, परन्तु यह सच्च है कि मसीही जहाँ भी रहते हैं उनकी जिम्मेदारी रहती है। इस समय के लिए कम से कम मसीहियों की जड़ें दृढ़ता से वहीं हैं जहाँ वे रहते हैं। वे जानते हैं कि परमेश्वर ने इस संसार को रचा है और इसे अच्छा कहा है। मसीही इस सृष्टि की देखभाल करने वालों के रूप में अपनी जिम्मेदारियों को पहचानते हैं। वे अच्छी सरकार का जिम्मेदार नागरिकों के रूप में अपना योगदान देते। वे असहाय और जरूरतमंदों लिए न्याय मांगते हैं।

पतरस ने मसीहियों को सहयोगी के रूप में मानवीय समाज की जिम्मेदारियों की अवहेलना करने का कोई अवसर नहीं दिया है। उसी समय, मसीही पुराने गीत के इन शब्दों से जागरूक है जिसका हिन्दी शब्द हैं "हम यहाँ हैं परन्तु हम मुसाफिर है।"[1] चार्ल्स एच. एच. स्कोबी ने अच्छी तरह से जान लिया था कि "पवित्रशास्त्र में परमेश्वर के दृढ लोगों में और उनकी यात्री होने की बुलाहट में हमेशा तनाव रहेगा।"[2] नए इस्राएल के लिए तनाव अधिक प्रत्यक्ष नहीं यह पुराने के लिए था।

पहली शताब्दी के भूमध्य जगत में लोगों के लिए राजनैतिक-निष्ठा नगर के लिए थी राष्ट्र के लिए नहीं। नागरिक, विशेष रूप से अपने नगर की निष्ठा को लेकर लोगों पर प्रभाव डालते थे।[3] रोमी शासन आने से पहले नगर के मामलों में लोकतांत्रिक नगरों के प्रत्येक नागरिक को वोट का बराबर अधिकार था। नगर में कुछ परदेशी वासियों की संख्या को छोड़कर। व्यापारी या अन्य काम करने वाले पीढ़ियों पीढ़ी तक रहते थे। फिर भी वे गैर नागरिक ही रहते थे। वे फाटकों में पतरस के शब्दों का प्रयोग करते थे, "परदेशी और यात्री।" शब्द जो पतरस ने प्रयोग किए वे उसके पाठकों को परिभाषित किया था (1) पुराना नियम से शब्दों का प्रयोग (1:17 की टिप्पणी को देखें), और (2) समकालीन जगत में सामान्य रूप से प्रयोग किए जाने वाले शब्दों से।

क्योंकि वह वे लोग थे जिनकी नागरिकता स्वर्ग में थी, पतरस के पाठकों को **शारीरिक कामनाओं से बचना था**। जे. रमसे मिकाएल ने इस वाक्य को इस तरह अनुवाद किया "अपने प्राकृतिक आवेगों का त्याग करो।"[4] पतरस के शब्दों में कोई सुझाव नहीं है कि सभी "प्राकृतिक आवेग" बुरे हैं। भोजन की इच्छाएँ, आत्मनिर्भरता या यौन अभिव्यक्ति अपने आप में गलत नहीं है। इच्छाएँ शारीरिक इच्छाएँ बन जाती हैं जब वे दूसरों को ताक पर रखकर आत्म संतुष्टि के लिए किसी व्यक्ति को चलाती हैं। शारीरिक इच्छाओं का त्याग करना है जिसमें

यौन अनैतिकता के प्रलोभन भी सम्मिलित हैं, परन्तु अन्य इच्छाएँ भी हैं वे भी आत्मा के विरुद्ध युद्ध करती हैं। उनमें से कइयों की प्रेरित ने पहले ही से सूची दे रखी है (देखें 2:1)। पौलुस ने लिखा, "क्योंकि शरीर आत्मा के विरोध में और आत्मा शरीर के विरोध में लालसा करती है" (गलातियों 5:17)।

जिनकी नागरिकता इस संसार की थी वे शारीरिक कामनाओं या दूसरों पर दबाव डालने के द्वारा चलाए जाते थे। विश्वासियों को दूसरों को ताक पर रखकर अपनी आत्म-संतुष्टि पाने के लिए शारीरिक आवेगों को त्यागना था। सम्भवतः पतरस ने ये प्रोत्साहन उन लोगों के दिए जो सताव का अनुभव कर रहे थे। वह चाहता था कि वे इस तरह से अपना जीवन व्यतीत करें कि संसार के लोगों के पास उन पर दोष लगाने का कोई अवसर न मिले जिन बातों में वे अपने ही लोगों को देखते थे।

यही एकमात्र समय है 1 पतरस में जब शब्द "प्राण" (ψυχή, *सुखे)* का एकवचन में प्रयोग किया है। नया नियम में शब्द प्राण का अर्थ प्रायः "एक व्यक्ति" से बढ़कर नहीं होता था। (देखें, उदाहरण के लिए, प्रेरितों के काम 2:43 जहाँ NRSV अनुवाद करती है, "प्रत्येक व्यक्ति पर भय छा गया।") एक समय, यीशु ने प्राण को शरीर के विरोध में रखा : "जो शरीर को घात करते हैं, पर आत्मा को घात नहीं कर सकते, उन से मत डरना" (मत्ती 10:28)। कभी-कभी ऐसा भी हुआ है कि "प्राण" और "आत्मा" का अर्थ समरूप सा होता है। इस विषय में, ऐसा आभास हुआ कि पतरस ने शब्द प्राण के लिए मानवीय स्वभाव में शारीरिक आवेगों के लिए प्रयोग किया जो कि भद्र और ईश्वरीय आदर्श की ओर चले जाते हैं। प्राण अलग इकाई नहीं है, शरीर से अलग, जैसे "शारीरिक इच्छाएँ" शरीर से अलग-अलग इकाइयाँ नहीं हैं।

आयत 12. 1 पतरस 2:12 और 3:16 में समानताएँ महत्वपूर्ण हैं। इस पूरी पत्री में, प्रेरित का ध्यान अपने पाठकों (1:14-19) के **व्यवहार** (ἀναστροφή, *एनास्ट्रोफे)* पर, जीवन आचरण पर चिंतित था। पतरस चाहता था कि मसीही अपने आस-पास के अन्यजाति लोगों की संस्कृति पर अपने पड़ने वाले व्यवहार के प्रति चौकस रहें। न्यायवादी लोगों की एक कहावत है, "कानून को मात्र खरा ही नहीं होना चाहिए परन्तु इसे खरा दिखना चाहिए।" जो दिखता है उसका महत्व होता है। कलीसिया अन्यजाति लोगों के सामने किस तरह से प्रकट होती है इसके विषय पौलुस को भी चिन्ता थी (1 कुरिन्थियों 10:32; कुलुस्सियों 4:5)। यीशु के मन में कुछ भिन्न था जब उसने कहा, "सावधान रहो! तुम मनुष्यों को दिखाने के लिये अपने धर्म के काम न करो" (मत्ती 6:1)। धार्मिकता का व्यवहार आत्म-प्रशंसा की इच्छा के द्वारा उत्प्रेरित होता है बजाय इसके कि बिना किसी प्रतिफल के परमेश्वर का आदर करने की इच्छा हो। यह परमेश्वर की महिमा थी जो पतरस के मन में थी जब उसने उनको बताया **अन्यजातियों में तुम्हारा चाल-चलन भला हो**।

जब यहूदी ने "अन्यजाति" शब्द का प्रयोग किया उसका अर्थ गैर यहूदी से था। इसी तरह से सुसमाचारों में इस शब्द का प्रयोग किया गया है (उदाहरण के

लिए, मत्ती 10:5)। पतरस और पौलुस के लिए "यहूदी" शारीरिक वंश के द्वारा या यहाँ तक कि खतना और व्यवस्था के औपचारिक अनुष्ठान के प्रति पालन करने के द्वारा परिभाषित नहीं किया था। यदि यहूदी होने के नाते परमेश्वर के लोग होने का अर्थ है तो वास्तविक यहूदी वही थे जिन्होंने मसीह को ग्रहण किया (रोमियों 2:28, 29)। यदि यह बात है तो यह भी जरूरी है कि अन्यजातियों के एक नया अर्थ है। जैसा पतरस ने शब्द प्रयोग किया, इसका अर्थ गैर यहूदी नहीं है परन्तु गैर मसीही है। अंग्रेजी भाषा में शब्द गैर मसीही "मूर्तिपूजकों" के लिए है। इस भेदभाव को लेने के लिए यह प्रयास है जिसने NIV को "अन्यजाति" के रूप में अनुवाद किया ἔθνη *(एथने)* जब यह सुसमाचारों में आता है, परन्तु इस अंश में "मूर्तिपूजकों" के लिए उसी शब्द का अनुवाद किया है।

1:6-8 में, पतरस ने उन कष्टों को सम्बोधित किया जो मसीही झेल रहे थे। अब उसने संकेत दिया उन कष्टों को होना जरूरी था। अभी तक, रोम से कोई अधिकारिक आदेश जारी नहीं हुआ था जो मसीहियत को अवैध धर्म बनाता, परन्तु यह मूर्तिपूजक समाज के लिए नया और अनोखा था। विश्वासियों ने स्वयं को अफवाह और द्वेष के पात्र पाया। इसे समझने के लिए थोड़ी सी कल्पना की जरूरत थी कि पतरस के ऐसा कहने का अर्थ क्या था **जिन-जिन बातों में वे तुम्हें कुकर्मी जानकर बदनाम करते हैं**। संज्ञा रूप शब्द का अनुवाद किया गया "बदनामी" यह उन बातों में था जिसे प्रेरित ने अपने पाठकों को छोड़ने के लिए कहा था (2:1)। भले ही उनकी बदनामी की गई थी, मसीहियों को उसी प्रकार से प्रत्युत्तर नहीं देना था।

पतरस की चिन्ता यह नहीं थी कि उसके पाठक बदनाम हों। जिसकी उसने आशा की थी। उसकी चिन्ता यह थी कि ऐसी सच्चाई हो सकती है जिसकी टिप्पणियों से बदनामी हो। मात्र यही नहीं, वह चाहता था कि पाठकों के पवित्र जीवन इतने स्पष्ट हो जाए कि वे उसी घड़ी गैर विश्वासियों से हुई टिप्पणियां पर लज्जित न हों। कुछ निष्पक्ष लोग भी होंगे **जो उनके भले कामों को देखकर उन्हीं के कारण कृपा-दृष्टि के दिन परमेश्वर की महिमा करें**। 1:6-8 में, प्रेरित ने अपने पाठकों के कष्टों को सम्बोधित किया; यहाँ उसने बदनामी के द्वारा उनको कष्टों पर स्पष्ट रूप से विचार किया। दोनों ही स्थानों पर मसीहियों के व्यवहार से जुड़े हुए कष्टों का परिणाम परमेश्वर की महिमा था। उसकी महिमा और मसीहियों की पुष्टि "प्रगट होने के दिन" समझी जाएगी जो वही दिन है "यीशु मसीह के प्रगट होने" का दिन (1:7)।

नया नियम में यही एक अवसर है जब प्रभु के वापिस आने के दिन को "प्रगट होने का दिन" कहा गया है। LXX में परमेश्वर के कार्य को कुछ अनोखे और प्रतापी ढंग से प्रयोग किया गया है। कभी-कभी प्रभु का प्रकटीकरण उसके लोगों के लाभ के लिए होता है (निर्गमन 3:16), और कभी-कभी यह दण्ड के लिए होता है (यिर्मयाह 10:15)। लूका 19:44 में, यीशु ने यहूदियों को दोषी ठहराया क्योंकि उन्होंने "प्रकटीकरण के दिन" यीशु के प्रकटीकरण के समय यीशु को नहीं पहचाना, उसका देह धारण करना इस्राएलियों के लिए एक सार्थक घटना थी,

परन्तु वह इसे पहचानने में विफल हो गए। जैसे पतरस ने इस शब्द का प्रयोग किया, इससे ऐसा आभास होता है यह दण्ड के लिए प्रभु की वापसी का वर्णन करता है। मसीही लोग मसीह के द्वारा समर्थन पाएंगे जब वह उन लोगों का न्याय करने के लिए आएगा जिन्होंने उनकी निन्दा की है या उन्हें सताया है।[5] NRSV ने सही तरह से भांप लिया है: ". . . और परमेश्वर की महिमा होगी जब वह न्याय के लिए आएगा।"

प्रशासनिक अधिकारियों के प्रति अधीनता (2:13-17)

पत्र के निम्नलिखित भागों में (2:13-3:7), प्रेरित ने जीवन के तीन क्षेत्रों में अधीन होने के लिए बिनती की हैः (1) प्रशासन के लिए नागरिक, (2) स्वामियों के प्रति दास और (3) पत्नियों के पति। ऐसा लगता है यह उपदेश 2:12 का ही विस्तार हैं, "अन्यजातियों में तुम्हारा चाल-चलन भला हो।" उन सब के लिए सामान्य बात व्यवस्थित सामाजिक जीवन अधिकारियों के लिए उचित आदर के आधार पर है।

नया नियम की पत्रियों में, ऐसे कुछ स्थान हैं जहाँ परिवार के भिन्न-भिन्न सदस्यों की जिम्मेवारियों को रखा गया है। सबको इस जरूरत पर बल दिया गया छोटे पद पर हैं वे उनके अधीन हों जो बड़े हैं। उनको अक्सर "घरेलू संहिता" कहा गया है, या जर्मनी भाषा का प्राचीन शब्द किया, *हाउस्टाफेलन* (*हाउस्टाफेल* एकवचन में) प्रयोग किया गया। वे संहिताएँ जो 1 पतरस में हैं वे अधिकांश रूप से इफिसियों 5:22-6:9 और कुलुस्सियों 3:18-4:1 से मेल खाती हैं, 1 तीमुथियुस 2:8-15 और तीतुस 2:1-10; 3:1, 2 में भी समानता पाई जाती है। यूनानी मत के लेखक साधारणतया नया नियम (यहूदी, यूनानी और लतीनी पृष्ठभूमि से) के समकालीन परिवार के लिए कुछ नियम दिए हैं जो कुछ सीमा तक नया नियम की "संहिताओं" से मेल खाते हैं। नया नियम संहिताओं में मुख्य अन्तर हैं जब उनकी तुलना लौकिक जगत से की जाती है वह अन्तर है आपस के सम्बन्ध। नया नियम संहिताओं में, सम्बन्ध को लेकर स्वामियों के कुछ कर्तव्य हैं साथ ही साथ दासों के भी और प्रशासन की जिम्मेदारियाँ हैं साथ ही साथ लोग भी अधीन हैं।

मूल संहिताओं और उनके सामान्य लक्षणों को लेकर विद्वानों के बीच एक काफी विचार विमर्श हुआ है। पतरस के निर्देशों की प्रकृति और आशय कुछ सीमा तक स्पष्ट हो गए हैं जैसे हम अधिकाधिक इन संहिताओं के विषय सीखते हैं जो नया नियम और लौकिक जगत में प्रयोग किए जाते हैं।

[13]प्रभु के लिये मनुष्यों के ठहराए हुए हर एक प्रबन्ध के अधीन रहो, राजा के इसलिये कि वह सब पर प्रधान है, [14]और हाकिमों के, क्योंकि वे कुकर्मियों को दण्ड देने और सुकर्मियों की प्रशंसा के लिये उसके भेजे हुए हैं। [15]क्योंकि परमेश्वर की इच्छा यह है कि तुम भले काम करने के द्वारा निर्बुद्धि लोगों की अज्ञानता की

बातों को बन्द कर दो। [16]अपने आप को स्वतंत्र जानो, पर अपनी इस स्वतंत्रता को बुराई के लिये आड़ न बनाओ; परन्तु अपने आप को परमेश्वर के दास समझकर चलो। [17]सब का आदर करो, भाइयों से प्रेम रखो, परमेश्वर से डरो, राजा का सम्मान करो।

आयत 13. पतरस का निवेदन, **प्रभु के लिये मनुष्यों के ठहराए हुए हर एक प्रबन्ध के अधीन रहो**, सबके लिए है। जिस वाक्यांश का अनुवाद "मनुष्यों के ठहराए हुए हर एक प्रबन्ध" (πάσῃ ἀνθρωπίνῃ κτίσει, *पासे अन्थ्रोपीने क्रीसे)* हुआ है, वह कठिन है। उसका शब्दार्थ है "प्रत्येक मानवीय रचना।" प्रेरित ने अपने पाठकों से आग्रह किया कि मनुष्यों के मामलों में वे उचित आदर के साथ उन आर्थिक तथा सामाजिक व्यवस्थाओं के आधीन रहें जो व्यवस्थित समाज को बनाती हैं। पतरस की यह चेतावनी केवल शासन तक ही सीमित नहीं थी, वरन इस के बाद के पदों की यह माँग है कि अन्य के साथ शासन भी इसमें सम्मिलित हो। "गृह नियम" में यह भी सम्मिलित होता था कि घर के लोग शासकों के प्रति कैसा रवैया रखें। 1 तीमुथियुस 2:1, 2 में, पौलुस ने आग्रह किया कि "बिनती, और प्रार्थना, और निवेदन, और धन्यवाद, सब मनुष्यों के लिये किए जाएं। राजाओं और सब ऊंचे पद वालों के निमित्त।" उसने तीतुस 3:1 में यह भी जोड़ दिया कि "लोगों को सुधि दिला, कि हाकिमों और अधिकारियों के आधीन रहें, और उन की आज्ञा मानें, और हर एक अच्छे काम के लिये तैयार रहें।" शासकों के आधीन रहने से संबंधित कोई भी नियम इफिसियों 5:22-6:9 या कुलुस्सियों 3:18-4:1 में नहीं दिए गए हैं।

यद्यपि पतरस के शब्द अन्य "गृह नियमों" के समान हैं, हम उसके इस निवेदन को मात्र औपचारिक भाषा का उपयोग कहकर नहीं टाल सकते हैं। 1 पतरस के "नियम" अपना स्वरूप इस बात से लेते हैं कि पतरस अपने पाठकों को उस समाज के संदर्भ में संबोधित कर रहा था जिसमें वे थे। उनकी परिस्थिति विकट थी। पतरस ने आग्रह किया कि वे ऐसा कुछ भी न करें जिससे प्रशासनिक अधिकारी उन पर सन्देह करें। इसके विपरीत उनका व्यवहार किसी भी आलोचना से परे होना था। उन्हें उदाहरण बनकर "मनुष्यों के ठहराए हुए हर एक प्रबन्ध" के आधीन रहना था। मसीही परिस्थिति की अनिश्चितता का एक कारण था उनका "यीशु राजा" का प्रचार करना। थिस्सलुनीके के यहूदियों द्वारा पौलुस और उसके साथियों पर किए गए दोषारोपण: "ये सब के सब यह कहते हैं कि यीशु राजा है, और कैसर की आज्ञाओं का विरोध करते हैं" (प्रेरितों 17:7), में कुछ सत्य था। साथ ही उपनाम जैसे कि "बचाने वाला" और "सर्वशक्तिमान" नियमित रीति से कैसर के लिए भी प्रयुक्त होते थे। मसीहियों के लिए, यीशु ही एकमात्र बचाने वाला था; केवल परमेश्वर ही सर्वशक्तिमान था। मसीहियों की शब्दावली उनके लिए खतरे का कारण थी।

प्रेरित की माँग कि, **राजा के** आधीन रहें **इसलिये कि वह सब पर प्रधान है**, कुछ प्रश्न उठाती है: क्या 1 पतरस के पाठक शासकों द्वारा लाए गए सताव को

सह रहे थे? क्या यही कारण था कि प्रेरित को उनसे आग्रह करना पड़ा कि वे अपने अधिकारियों के आधीन रहें? नए नियम या समकालिक धर्मनिरपेक्ष स्रोतों से ऐसा कोई प्रमाण नहीं मिलता है कि इस प्रारंभिक समय में एशिया के स्थानीय शासकों द्वारा मसीहियत को दबाने का कोई व्यवस्थित प्रयास किया जा रहा था। इतना तो तय है कि रोम से ऐसा कोई सरकारी आदेश नहीं था। किंतु, इसका यह तात्पर्य नहीं है कि मसीहियों को सामाजिक अधिकारियों से कोई खतरा नहीं था। जब मसीहियों पर दोषारोपण किए जाते, जब उन पर लांछन लगाए जाते (2:12), तो स्थानीय अधिकारी उन पर दबाव डालते थे। पतरस चाहता था कि उसके पाठक मसीहियों द्वारा सामाजिक अधिकारियों को तुच्छ जानने के कारण विरोध के किसी भी कुचक्र में पड़ने से बच कर रहें।

मसीहियों का सरकार के साथ संबंध कठिन हो सकता है। सरकार एकाधिकार का दावा करती है। यह संभावना सदा बनी रहती है कि सरकार मसीही विश्वासियों से वह करवाना चाहे जो वे अपने भले विश्वास में होकर नहीं कर सकते हैं। जब यहूदी अधिकारियों द्वारा उसे आज्ञा दी गई कि वह मसीह का प्रचार नहीं करे, पतरस का प्रत्युत्तर था, "मनुष्यों की आज्ञा से बढ़कर परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना ही कर्तव्य कर्म है" (प्रेरितों 5:29)। ऐसी असामान्य परिस्थितियाँ आ सकती हैं जब मसीह के प्रति विश्वासयोग्य रहना और उन पर अधिकार जमाने वाले शासन के आधीन होना दोनों संभव नहीं हों। परन्तु सामान्य परिस्थितियों में, दैनिक दिनचर्या में, अधिकार और संरचना आवश्यक वस्तुओं के संपादन के लिए अनिवार्य होते हैं। "क्योंकि हाकिम अच्छे काम के नहीं, परन्तु बुरे काम के लिये डर का कारण हैं" (रोमियों 13:3)। जब अधिकारी सताने वाले हों, जैसा कि संभवतः पतरस के पाठकों ने उन्हें पाया था, तो उन्हें तुच्छ जानना या उनके प्रति केवल औपचारिकता निभाने का प्रलोभन रहता है। इससे परिस्थिति और भी बिगड़ सकती है। पतरस चाहता था कि मसीही अधिकारियों का आदर करें, केवल अपने ही कारण नहीं वरन "प्रभु के कारण।"

आयत 14. पतरस ने अभी कहा कि "राजा" के पास सर्वोच्च अधिकार है। परन्तु राजाओं के साथ उनके विचित्र इतिहास के कारण,[6] रोमी अपने शासक को राजा नहीं बुला सकते थे। फिर भी सम्राट वैसे ही कार्य करता था जैसे पूर्वी देशों के तानाशाह किया करते थे। भाषा के सामान्य उपयोग में, सम्राट राजा ही होता था। न केवल मसीही विश्वासियों को राजा के आधीन होना था, वरन उन्हें आदर के साथ **उसके द्वारा भेजे गए हाकिमों के भी** आधीन होना था। शब्द "हाकिम" (ἡγεμών, *हेगेमोन)* एक सामान्य शब्द है जो रोम के उच्च अधिकारियों तथा स्थानीय नागरिक अधिकारियों दोनों के लिए प्रयुक्त होता है।

पतरस के पाठक एशिया माइनर में चार बड़े रोमी प्रांतों में रहते थे।[7] इन में से दो, एशिया और पुन्तुस/बिथुनिया का शासन राज्यसभा के द्वारा एक वर्ष की अवधि के लिए भेजे गए राज्यपाल के द्वारा होता था। शेष दोनों, गलातिया और कप्पदुकिया पर सीधे सम्राट को उत्तरदायी प्रतिनिधि शासन करते थे। कहने को तो राज्यपाल राज्यसभा को उत्तरदायी होते थे, परन्तु वास्तव में सम्राट पूरी

तरह से नियंत्रण रखता था। यह कहना अनुचित नहीं होगा कि सभी राज्यपाल "उसके द्वारा भेजे जाते थे।" राज्यपाल रोम की सारी शक्ति के समर्थन से अपनी इच्छानुसार शासन करते थे। नए नियम में केवल दो राज्यपालों सिरिगयुस पौलुस (प्रेरितों 13:7) और गल्लियो (प्रेरितों 18:12) का ही उल्लेख है। प्रतिदिन के कार्यों में, एशिया के रहने वाले लोग, राज्यपाल जैसे उच्च अधिकारियों के साथ अप्रत्यक्ष रूप से व्यवहार करते थे। जब पतरस के पाठक स्थानीय अधिकारियों, न्यायाधीशों और सिपाहियों की अधीनता में आते, तो वे उनके उच्च अधिकारियों, राज्यपालों और राजा की भी अधीनता में आ जाते थे।

ऐसा कोई कारण नहीं था कि मसीही प्रशासकीय अधिकारियों के विरोध में हो जाएं। उन लोगों के लिए जो बहिष्कृत या अजनबी होकर देश में रह रहे थे, व्यवस्थित समाज का होना लाभकारी था। यद्यपि असामान्य परिस्थितियों में कोई निर्दोष जन अधिकारियों के हाथों सताया जा सकता था, किंतु **सरकारी अधिकारी कुकर्मियों को दण्ड देने और सुकर्मियों की प्रशंसा के लिये भेजे हुए थे।** इसमें कोई सन्देह नहीं था कि मसीही उन में से थे जो सही करते थे। पौलुस ने भी ऐसा ही तर्क दिया। शासक "तेरी भलाई के लिये परमेश्वर का सेवक है" (रोमियों 13:4)। न तो पतरस ने और न ही पौलुस ने राजाओं के ईश्वरीय अधिकारों के पक्ष में तर्क दिया। इसके स्थान पर उनका कहना था कि मसीही जिस समाज में रहते हैं उसमें विश्वसनीय तथा योगदान देनेवाले सदस्य बन कर रहें। इसलिए सामान्य परिस्थितियों में, वे अपने प्रभाव और प्रयास व्यवस्थित प्रशासन के पक्ष में देते थे।

आयत 15. जब मसीही आदरपूर्वक वैधानिक अधिकारियों के आज्ञाकारी होते तो उसके जो सकारात्मक परिणाम होते थे वे थे कि (1) वे परमेश्वर की इच्छा को पूरा करते, और (2) वे **निर्बुद्धि लोगों की अज्ञानता की बातों को बन्द** कर देते। पतरस यहाँ, यह कहकर कि मसीहियों पर बुराई दूसरों की अज्ञानता के कारण आती है, कोई दया भाव नहीं दिखा रहा था। जो मसीहियों पर झूठे लांछन लगाते वे निर्बुद्धि तथा साथ ही द्वेष रखने वाले भी थे। किंतु इसके साथ ही एक तात्पर्य भी था, कि जो मसीहियों के लिए दुःख का कारण थे, वे अपनी सर्वोत्तम भलाई की बात को पहचान नहीं पाए। नासरत का यीशु भलाई और बुद्धिमानी दोनों का स्रोत है। संसार की बुराई और अज्ञानता ही उसका विरोध करती है। जो लोग उनके भले नाम को बदनाम करते थे, मसीही **भले काम करने के द्वारा** उन लोगों की बुराई और अज्ञानता दोनों को बन्द कर सकते थे।

आयत 16. अपने पाठकों से अधिकारियों के आधीन रहने का आग्रह करते हुए पतरस ने उन्हें उनकी स्वतंत्रता का भी स्मरण करवाया। अधीनता और स्वतंत्रता साथ खड़े होते हैं। यूनानी-रोमी संसार में, स्वतंत्र मनुष्य को दास से पृथक करने वाली विशेष योग्यता से अधिक और कोई भिन्नता इतनी कड़ाई से लागू नहीं की जाती थी। मसीही इस भिन्नता की कोई परवाह नहीं करते थे। पौलुस ने दासों से कहा, "क्योंकि तुम जानते हो, कि जो कोई जैसा अच्छा काम करेगा, चाहे दास हो, चाहे स्वतंत्र; प्रभु से वैसा ही पाएगा" (इफिसियों 6:8)।

दासों के स्वामी से उसने कहा, "उन का और तुम्हारा दोनों का स्वामी स्वर्ग में है" (इफिसियों 6:9)। स्वतंत्र जन मसीह का दास था, और दास परमेश्वर द्वारा स्वतंत्र किया हुआ जन था। सुसमाचार कथा में स्वतंत्रता और दासत्व में एक विचित्र संबंध है। नासरत के आराधनालय में यीशु ने यशायाह के शब्द का उद्धरण दिया, "मुझे इसलिये भेजा है, कि बन्धुओं को छुटकारे का ... कुचले हुओं को छुड़ाऊं" (लूका 4:18)। पौलुस ने नाटकीय ढंग से पुष्टि की, "मसीह ने स्वतंत्रता के लिये हमें स्वतंत्र किया है" (गलतियों 5:1)। परन्तु फिर भी पौलुस ने अपनी पत्री का आरंभ अपने आप को मसीह का दास (δοῦλος, *डुलोस)* कहने के द्वारा किया (गलतियों 1:10)।

इस आयत के आरंभ में NASB ने एक क्रिया जोड़ी है, किन्तु यूनानी भाषा में वह नहीं है। 2:13 के आरंभिक शब्द: "अधीन रहो . . .", 2:16 के शब्दों **अपने आप को स्वतंत्र जानो**, के साथ अच्छा मेल रखते हैं - **स्वतंत्र मनुष्यों के समान** जो फिर भी **परमेश्वर के दास हैं**। कोई स्वेच्छा से आधीन हो सकता है, चाहे उसका विकल्प कोड़े और मृत्यु ही क्यों न हो। मसीही विश्वासियों को यह जान लेना चाहिए कि जब वे शासन के आधीन हो जाते हैं तो उससे वे अपनी स्वतंत्रता का परित्याग नहीं कर देते हैं। बिना परमेश्वर के नियमों की अवहेलना किए भी नियमों का पालन किया जा सकता है। जो व्यक्ति आज्ञापालन करना चाहता है, वह फिर भी स्वतंत्र होता है। मसीही स्वतंत्रता इस निवेदन पर आधारित है: जो यीशु को प्रभु स्वीकार करता है वह न केवल उसकी आज्ञा का पालन करता है; वरन मसीही विश्वासी उसकी जीवन शैली को भी अपना लेता है। यीशु की इच्छा उसकी अपनी इच्छा बन जाती है। यीशु लोगों को आँखें बन्द करके आज्ञापालन के नहीं बुलाता है। वह लोगों को बुलाता है कि वे उस से प्रेम करें। जो प्रभु से प्रेम करते हैं वे उसकी सेवा भी करते हैं क्योंकि उन की अपनी इच्छा उसकी इच्छा के साथ घुल-मिल गई है। वे आज्ञाकारिता की स्वतंत्रता में "परमेश्वर के दास" बनकर रहते हैं। इसका विकल्प है असीमित स्वतंत्रता का नारकीय अस्तित्व।

आरंभ से ही, मसीही के देह के भीतर और बाहर दोनों ही स्थानों पर, ऐसे भी हुए हैं जिन्होंने आज्ञाकारिता की स्वतंत्रता के विचार को नहीं समझा है। कुछ लोगों का प्रत्युत्तर होता है वैधानिक बन्धुवाई। यीशु को प्रभु मान लेने के बाद कुछ लोग आज्ञाकारिता के बोझ को उठाए रहते हैं क्योंकि वे प्रभु के सामर्थ्य से डरते हैं। अन्य विश्वासी, आज्ञाकारिता की स्वतंत्रता को न समझ पाने के कारण, परमेश्वर के अनुग्रह पर अनुमान लगाते हैं। स्वतंत्रता अधिकार के लिए बहाना बन जाती है। पतरस ऐसों को सिखाना चाहता था, इसलिए उसने लिखा **अपनी इस स्वतंत्रता को बुराई के लिये आड़ न बनाओ**।

पौलुस के विरोधियों का दावा था कि अनुग्रह का सिद्धांत उस ही बात को प्रोत्साहित करता है जिसे पतरस मना कर रहा था। उनका कहना था कि पौलुस के सिद्धांत पाप को प्रोत्साहित करते हैं। उनका तर्क था कि "जितना अधिक पाप, उतना अधिक अनुग्रह! इसलिए हम पाप करें जिससे अनुग्रह बहुतायत से हो।" पौलुस ने उनसे प्रत्युत्तर में पूछा, "हम जब पाप के लिये मर गए तो फिर आगे को

उस में क्योंकर जीवन बिताएं?" (रोमियों 6:2)। उस मसीही विश्वासी के लिए जो स्वतंत्रता के ज़ोर पर स्वार्थ सिद्धि करना चाहता है, पौलुस की ओर से एक प्रश्न था; और पतरस की ओर से एक प्रतिबंध। दोनों इस बात से सहमत थे कि स्वतंत्रता की अभिव्यक्ति परमेश्वर की पूर्ण आज्ञाकारिता के समर्पण की सीमाओं में होती है।

आयत 17. जैसा वह अच्छा शिक्षक था, पतरस ने चार अनिवार्यताओं के साथ अपनी बात संक्षिप्त की: **आदर, प्रेम, भय, आदर।** अंग्रेज़ी के पाठक के लिए इन क्रियाओं में होने वाले काल-परिवर्तन प्रत्यक्ष नहीं हैं। प्रेरित ने एक सामान्य भूत अनिवार्य प्रयोग कर के तीन वर्तमान अनिवार्य प्रयुक्त किए। प्रश्न यह है कि क्या इन परिवर्तनों का कोई महत्व है? क्या यह काल-परिवर्तन अर्थ प्रकट करने में कोई योगदान करता है? यदि करता है तो यह परिवर्तन अनुवाद में भी प्रकट होना चाहिए।

अनुवादक मूल भाषा के अर्थ को न केवल अपने शब्दों के चुनाव के द्वारा, वरन उनके बीच प्रयुक्त होने वाले विराम-चिन्हों के द्वारा भी प्रकट करते हैं। इन अनिवार्य को KJV समानान्तर में अनुवाद करती है। अनुवादकों को काल-परिवर्तन में बहुत कम या कोई भी महत्व नहीं दिखाई दिया। NASB तथा NRSV भी यही करते हैं। किंतु NIV अनुवाद करती है, "प्रत्येक को उचित आदर दो: भाइयों के भाईचारे से प्रेम करो, परमेश्वर का भय मानो, राजा का आदर करो।" REB भी इसी समान है। इन बाद के अनुवादों ने प्रथम क्रिया के सामान्य भूत काल को समझा कि वे आने वाले तीनों अनिवार्य कालों का कुल जोड़ है। इसलिए तात्पर्य यह है कि, "सभी मनुष्यों का आदर करो। मेरा विशेष अर्थ है कि भाइयों से प्रेम रखने, परमेश्वर के भय, और राजा के आदर के द्वारा सभी मनुष्यों का आदर करो।" इस अनुवाद के समर्थन में क्रिया "आदर" का दो बार प्रयोग है। यह सच है कि सामान्य भूत काल और वर्तमान अनिवार्य काल में भिन्नता कभी-कभी बहुत कम होती है; परन्तु यहाँ पर NIV का अनुवाद अधिक अच्छा है। लेकिन फिर भी, वैकल्पिक विराम-चिन्हों का उपयोग वाक्य के अर्थ को बहुत अधिक परिवर्तित नहीं करता है। दोनों ही अर्थों में, मसीहियों से कहा गया है कि वे सभी का आदर करें; परन्तु इस आदर के अतिरिक्त, उन्हें मसीह में अपने भाई और बहनों से प्रेम करना है।

अनिवार्य अपने आप में अर्थ से भरपूर हैं। जातिवाद में प्राचीन विश्व भी वर्तमान से कुछ कम नहीं था। पतरस के आग्रह : **सब का आदर करो**[8] में, राष्ट्र, भाषा, जाति और संस्कृति की सीमाएं मिट जाती हैं। पतरस ने यह कई वर्ष पहले सीखा था कि परमेश्वर कोई भेदभाव नहीं करता है (प्रेरितों 10:34)। पौलुस ने लिखा, "अब न कोई यहूदी रहा और न यूनानी; न कोई दास, न स्वतंत्र; न कोई नर, न नारी; क्योंकि तुम सब मसीह यीशु में एक हो" (गलतियों 3:28)। सभी मनुष्यों का आदर करना चाहिए क्योंकि परमेश्वर ने "एक ही मूल से मनुष्यों की सब जातियां सारी पृथ्वी पर रहने के लिये बनाई हैं" (प्रेरितों 17:26)। जाति, लिंग, अथवा संस्कृति, शारीरिक स्वरूप या अक्षमताओं के आधार पर लोगों को

एक-रंग कर देना अपमानजनक है किसी भी ऐसे व्यक्ति के लिए जो "सभी लोगों" के सृष्टिकर्ता को अपना परमेश्वर स्वीकार करता है।

जबकि यीशु ने अपने शिष्यों को सिखाया कि वे सभी मनुष्यों का आदर करें, जो उनके साथ उनके विश्वास को मानते थे उनके साथ आदर से भी बढ़कर करना था। उनके साथ **भाइयों सा प्रेम** रखना था। पतरस ने यहाँ और 5:9 में "भाइयों" (ἀδελφότης, *अडेलफोटेस)* शब्द प्रयोग किया। यह नए नियम में और कहीं नहीं पाया जाता है। "भाई" वे लोग हैं जो अंगीकार करते हैं कि नासरत का यीशु को जीवते परमेश्वर का पुत्र मसीह है।[9] जैसा 5:9 स्पष्ट करता है, इसका तात्पर्य उस स्थानीय कलीसिया के लोगों से जिसका वह सदस्य है बढ़कर है। संसार भर में मसीह की कलीसियाएँ विश्वासियों की संगति हैं (रोमियों 16:16)। प्रेम सबके साथ किया जाता है। नए नियम में विश्वासियों के मध्य प्रेम का अनुपम बंधन बहुधा चिंता का विषय है। पतरस के "सब का आदर करो, भाइयों से प्रेम रखो" के समानान्तर पौलुस का "सब के साथ भलाई करें; विशेष कर के विश्वासी भाइयों के साथ" (गलतियों 6:10) है। यीशु ने कहा था, "यदि आपस में प्रेम रखोगे तो इसी से सब जानेंगे, कि तुम मेरे चेले हो" (यूहन्ना 13:35)।

अन्तिम दोनों अनिवार्य निकटता से संबंधित हैं, जैसे कि पहले दोनों। विश्वासी का **परमेश्वर से डर** मानना है, और उसे **राजा का सम्मान** करना है। यीशु ने कहा कि व्यवस्था की सबसे महान आज्ञा है कि परमेश्वर से प्रेम करें (मरकुस 12:28-30)। प्रेम और भय के मध्य कुछ तनाव है, परन्तु वे दोनों एक-दूसरे के निषेधक नहीं हैं, और निश्चय ही विलोम नहीं हैं। "भय" अनेक अर्थों वाला शब्द है। एक परिभाषा के अनुसार "भय" जड़ कर देने वाला शब्द है। जिस व्यक्ति को एक तोड़ा दिया गया था उसने यह व्यर्थ बहाना बनाया: "मैं डर गया और जा कर तेरा तोड़ा मिट्टी में छिपा दिया" (मत्ती 25:25)। यूहन्ना ने इस शब्द का प्रयोग इस अभिप्राय के साथ किया: "प्रेम में भय नहीं होता, वरन सिद्ध प्रेम भय को दूर कर देता है" (1 यूहन्ना 4:18)। जो आत्मा केवल इसलिए आज्ञाकारी है कि परमेश्वर के पास एक बड़ा सोटा है वह बहुत कम संतुष्टि पाएगी, और इस कारण अपने मसीही विश्वास में स्थिर रहने की कम शक्ति भी।

एक अन्य परिभाषा के अनुसार, "भय" सृष्टिकर्ता के आमने-सामने खड़े होने की मानवजाति की अनिश्चित, प्रयोगात्मक मुद्रा है। परमेश्वर का भय मानने का अर्थ है उसके सम्मुख एक अनिश्चितता के साथ सिर झुकाए हुए, थरथराती हुई जुबान के साथ आना। यह परमेश्वर से निवेदन करना है, न कि उसके सम्मुख तर्क और स्पष्टीकरण प्रस्तुत करना। बुद्धिमानों का कहना है कि "यहोवा का भय मानना बुद्धि का मूल है" (नीतिवचन 1:7)। परमेश्वर का भय वह श्रद्धापूर्ण अज्ञान और अनिश्चितता है जो अर्ध-रात्रि में आकाश की ओर देखने, या अपने ही हृदय में झाँकने से आती है। भय का नम्रता से निकटता का संबंध है। यह घमण्ड और स्वार्थ का विलोम है। जब यशायाह ने परमेश्वर का सामना किया, तो वह भय से अभिभूत हो गया। "हाय! हाय! मैं नाश हुआ; क्योंकि मैं अशुद्ध होंठ वाला मनुष्य हूं" (यशायाह 6:5)। मूसा ने चाहा कि इस्राएल दोनों ही बातें जाने कि

परमेश्वर दयालु है, "वह तुम को न तो छोड़ेगा और न नष्ट करेगा" (व्यवस्थाविवरण 4:31), और यह कि "तुम्हारा परमेश्वर यहोवा भस्म करने वाली आग है" (व्यवस्थाविवरण 4:24)। विश्वासी को परमेश्वर के प्रेम और अनुग्रह को हलके में नहीं लेना चाहिए। मसीहियों को यह दुःसाहस नहीं करना चाहिए कि "हम पाप करते रहें, कि अनुग्रह बहुत हो" (रोमियों 6:1; RSV)। पतरस ने अपने पाठकों से कहा कि वे "परमेश्वर का भय" मानें।

अन्तिम अनिवार्य, "राजा का सम्मान करो" के साथ पतरस ने उन चेतावनियों का अन्त किया जिनका आरंभ 2:13 में हुआ था। न केवल मसीहियों को राजा को समर्पित रहना था; वरन उसका आदर भी करना था। लेकिन प्रेरित ने अभी ही यह स्पष्ट किया था कि सभी लोगों का आदर होना चाहिए। जो आदर राजा का होना था, उसके साथ कोई समझौता नहीं होना था, उसे योग्य होना था। एशिया माईनर के प्रथम और द्वितीय शताब्दी के यूनानी शिला-लेखों में रोमी सम्राटों को भरपूर ईश्वरीय आदर दिया गया है। वह ईश्वर, बचाने वाला, और सर्व सामर्थी माना जाता था। पतरस के लिए राजा आदर का पात्र तो था, परन्तु भक्ति और आराधना का नहीं। साथ ही, राजा के प्रति वह भय भी नहीं होना था जो परमेश्वर के लिए सुरक्षित रखा गया है। पतरस ने अपने पाठकों को वैधानिक शक्तियों के प्रति उनके संबंधों के बारे में सूक्ष्मता और निपुणता से निर्देश दिए। उन्हें राज्य करने वाले शासक के प्रति समर्पण और आदर तो रखना था, परन्तु उससे डरना नहीं था। मसीहियों को शासकों से वैसा नहीं डरना चाहिए जैसा वे परमेश्वर से डरते हैं।

स्वामियों के प्रति समर्पण (2:18-20)

18हे सेवको, हर प्रकार के भय के साथ अपने स्वामियों के अधीन रहो, न केवल उनके जो भले और नम्र हों पर उनके भी जो कुटिल हों। 19क्योंकि यदि कोई परमेश्वर का विचार करके अन्याय से दुःख उठाता हुआ क्लेश सहता है तो यह सुहावना है। 20क्योंकि यदि तुम ने अपराध करके घूँसे खाए और धीरज धरा, तो इस में क्या बड़ाई की बात है? पर यदि भला काम करके दुःख उठाते हो और धीरज धरते हो, तो यह परमेश्वर को भाता है।

स्कोबी का विचार था "जो कुछ [नया नियम] दास प्रथा के बारे में कहता है उसे यूनानी-रोमी संसार के दृष्टिकोण की पृष्ठभूमि में देखा जाना चाहिए, जहाँ अर्थव्यवस्था दास प्रथा पर निर्भर थी जो कि बहुत विशाल पैमाने पर विद्यमान थी।"[10] जब पतरस ने लिखा, तब मसीही लोग छोटे और सताए जा रहे अल्पसंख्यक वर्ग थे। उनके द्वारा संसार से दास प्रथा के उन्मूलन की कोई संभावना नहीं थी, चाहे वह मसीह की शिक्षाओं के कितनी भी विपरीत क्यों न हो। नए नियम में प्रश्न यह है कि दास प्रथा के साथ निभाया कैसे जाए न कि उसे मिटाया कैसे जाए। उत्तर सदा यही होगा कि परमेश्वर प्रत्येक मनुष्य को प्रतिष्ठा

और मूल्य देता है। मसीह की मृत्यु उतनी ही दास के लिए भी थी जितनी स्वामी के लिए थी।

आयत 18. सरकारों से ध्यान हटाकर, पतरस समर्पण की ओर एक और भी अधिक व्यक्तिगत सामाजिक ढाँचे के परिपेक्ष में आया: **सेवकों, अपने स्वामियों के अधीन रहो।**[11] जिन पाठकों को पतरस ने संबोधित किया उन में से कुछ चल-संपत्ति थे; उनके वास्तविक स्वामी कोई और होते थे। प्राचीन समाजों में दास प्रथा जीवन का एक अभिन्न अंग थी। इसकी नैतिकता पर कोई प्रश्न नहीं उठाया जाता था। कोई व्यक्ति इसलिए दास होता था क्योंकि दुर्भाग्य वश वह युद्ध में बन्दी बनाया गया था या फिर क्योंकि उसकी माँ एक दास थी। दास का भाग्य इस बात पर निर्भर था कि उसका स्वामी उससे क्या सेवा लेना चाहता था। थोड़े से दास किसी कौशल में बहुत निपुण होते थे। वे अपने स्वामी के बच्चों के अध्यापक बन सकते थे, या अपने स्वामियों के घरों में किसी अन्य क्षमता का कार्य कर लेते थे। जब तक कि उचित दूरी बनाई रखी जाती थी, वे अपने स्वामियों के साथ एक प्रकार की मित्रता का व्यवहार रख सकते थे। कुछ प्रभावी पदों तक भी उन्नति कर लेते थे परन्तु ऐसे दास बहुत ही कम होते थे। अधिकांश दासों के पास छोटे और बहुत परिश्रम वाले कार्य होते थे। जो खदानों या कारखानों में कार्य करते थे उनका जीवन-काल कुछ वर्ष से अधिक होने की संभावना नहीं थी। वे व्यापार के खर्चे का एक भाग होते थे। दास सस्ते होते थे। उन्हें गधों या बकरियों के समान बदला जा सकता था।

पौलुस के द्वारा दासों को दिए गए निर्देशों की तुलना में, पतरस ने दो अनपेक्षित शब्दों को चुना। (1) उसने "सेवकों" या "घर के दासों" (οἰκέται, *ओइकेटाई)* को संबोधित किया, जबकि पौलुस ने और अधिक कठोर शब्द जिसका अर्थ "बन्धुआ-दास" (δοῦλοι, *डुलोई*; इफिसियों 6:5; कुलुस्सियों 3:22) का प्रयोग किया। (2) पतरस ने "स्वामियों" के लिए (δεσπόται, *डिस्पोटाई)* अधिक कठोर शब्द प्रयोग किया, जबकि पौलुस ने कुछ कोमल शब्द (κύριοι, *क्युरियोई)* प्रयोग किया। पतरस द्वारा प्रयोग के लिए चुने गए शब्दों की अवहेलना मात्र साहित्यिक आधार पर करना अनिश्चित है,[12] चाहे दोनों के मध्य भिन्नता अधिक न भी हो। क्या वह "बन्धुआ-दासों" *(डुलोई)* को कुछ भिन्न परामर्श देता?

जो यूनानी-रोमी संसार में दास-प्रथा को एक उदार प्रथा[13] के रूप में देखना चाहते हैं वे इस बात की समझ नहीं रखते हैं कि प्राचीन संसार के प्रभावी और गूढ़ लेखकों का दास-प्रथा के प्रति दृष्टिकोण पक्षपाती था। धनी लोग घर के दासों, मुनीमों, अध्यापकों, और वैधानिक सेवकों के साथ मित्रतापूर्ण व्यवहार सहित संपर्क रखते थे। उनके द्वारा लिखित अभिलेखों से प्रतीत होता है कि दास होना वर्तमान के किसी लेखांकन व्यवसाय में कार्य करने के समान था। परन्तु ऐसा नहीं था। जो दास बनते थे उनमें से अधिकांश के पास कोई विशेष कौशल नहीं होता था। प्राचीन अभिलेख यदा-कदा सामान्य दासों के जीवन की झलकियाँ प्रस्तुत करते हैं, परन्तु संभ्रांत लोगों का कारखानों या खदानों में कार्य करने के लिए रखे गए दासों से व्यक्तिगत संपर्क कम ही होता था। वे तो पशु समान होते थे। ऐसे

दास की मृत्यु का अर्थ मात्र आर्थिक हानि से अधिक और कुछ नहीं होता था। घरों में कार्य करने वाले दास भी जानते थे कि यदि उन्होंने सीमाएं लाँघीं तो वे भी कारखानों में पहुँचा दिए जाएंगे। आराम के साथ शासन करने वाली श्रेणी के लोग, जिनके शब्द हमारे पास प्राचीन संसार से आते हैं, सामान्यतः यह जानना नहीं चाहते थे कि अधिकांश दासों के साथ क्या होता है।[14] हो सकता है कि पतरस "बन्धुवाई-दासों" को "घर के दासों" से भिन्न परामर्श देता। ऐसा तो नहीं होता कि वह उन दासों को, उन्हें जो सबसे तुच्छ स्थानों पर हैं, उनके लिए यह स्वीकार कर लेता कि वे लूटें, हत्या करें, और नष्ट करें; परन्तु उसके लिए कठिन होता कि वह उनसे आग्रह करे कि वे आदर सहित समर्पण दिखाएं।

जिस शब्द का NASB में अनुवाद **आदर** (φόβος, *फोबोस)* हुआ है वह 2:17 में "डरो" अनुवादित हुई क्रिया का संज्ञा स्वरूप है; उस आयत में जहाँ लिखा है "परमेश्वर से डरो।" पतरस के कहने का यह तात्पर्य नहीं था कि दास अपने स्वामियों के प्रति वैसा ही रवैया रखें जैसा वे परमेश्वर के प्रति रखते थे। परन्तु फिर भी, इस शब्द को "आदर" अनुवादित करना दुर्बल है। दास के स्तर के कारण उन से आदर से कुछ और अधिक की अपेक्षा रखी जाती थी। यद्यपि स्वामी और शासन दोनों ही के प्रति समर्पण "प्रभु के लिये" (2:13) होना था, लेकिन यह असंभाव्य था कि पतरस यह कहना चाह रहा हो कि परमेश्वर के प्रति अपने डर के कारण दास स्वामियों को समर्पित रहें। वरन, उसने दासों को उनकी अनिश्चित स्थिति को स्मरण करवाया। समर्पण से कम कुछ भी उनके लिए स्वयं-पराजित होने का कारण होता। वे असहाय थे। दास अपने लिए ऐसे स्वामियों को नहीं चुन सकते थे जो उनके आदर के योग्य हों। अपनी भयावह स्थिति के कारण, उन्हें अधीन रहना था **न केवल उनके जो भले और नम्र हों पर उनके भी जो कुटिल हों।**

आयत 19. पतरस पहले ही समर्पण को स्वतंत्रता के साथ जोड़ चुका था (2:13, 16)। क्या उनके लिए जो दास होकर समर्पित रहते हैं स्वतंत्रता का कोई अर्थ है? संभवतः हो सकता है यदि स्वतंत्रता को कृपादृष्टि (χάρις, *खारिस)* में होकर देखा जाए। माना कि दासों को डर के कारण समर्पित रहना था, परन्तु उनकी भयावह स्थिति में आशा और शान्ति (यह सब "कृपादृष्टि" शब्द में निहित है) इस सीमा तक लाई जा सकती थी, कि वे अपने भाइयों और बहनों के साथ मिलकर अपने मन परमेश्वर पर दृढ़ता से लगाएं। पौलुस ने शब्द *खारिस* को लिया और उसे मसीही विश्वास के सबसे अनुपम सिद्धांतों में से एक बना दिया। पौलुस की सभी पत्रियों में इसका अनुवाद "अनुग्रह" किया गया है। पतरस ने इस शब्द को वैसा प्रयोग किया जैसा कि उसके आस-पास गैर-यहूदी संसार में किया जाता था। प्रेरित ने इस बात पर बल दिया कि यह दासों के लिए लाभप्रद होगा यदि अपने साथ होने वाले बुरे बर्ताव पर ध्यान लगाने के स्थान पर, वे परमेश्वर पर ध्यान लगाएं। विश्वासियों के समुदाय में उन्हें परमेश्वर के प्रति स्वतंत्र लोगों के समान ही समर्पित होना था। यह स्वतंत्रता, अब *खारिस* के रूप में, उनके संघर्ष में उन्हें संभाले रखेगी।

पतरस ने जिस समर्पण के लिए आग्रह किया वह **परमेश्वर का विचार करके**

होना था। पतरस ने शब्द "विचार" (συνείδησις, *सुनेईडेसिस)* को इस पत्री में तीन बार प्रयोग किया है। अन्य दोनों प्रयोगों (3:16, 21), में इसके साथ शब्द "शुद्ध" जुड़ा है जिससे कोई कठिनाई नहीं है। इस आयत में "विचार" शब्द का अर्थ कुछ अस्पष्ट है। यदि इसका शब्दार्थ सहित अनुवाद किया जाए तो बनता है "परमेश्वर का विवेक" (συνείδησιν θεοῦ, *सुनैडेसिन थियो)* संबंध कारक "परमेश्वर का" कठिन है। स्पष्ट है कि पतरस दासों से यह नहीं कह रहा था कि वे परमेश्वर के विवेक के कारण आज्ञाकारी रहें। शब्द सुनैडेसिस का सटीक अनुवाद अंग्रेज़ी का शब्द "conscience" अर्थात विवेक नहीं है। इसके अन्दर साझा किए गए ज्ञान का अभिप्राय है। इस संदर्भ में, यह दास और मसीह में उनके समान विश्वास लाने वालों के मध्य साझा किया गया ज्ञान है। उनके साझा किए जाने वाले ज्ञान का विषय परमेश्वर है। अर्थात, दासों को साझा किए गए "परमेश्वर के विवेक"[15] के कारण समर्पित रहना था। जे. एन. डी. केली ने इसका भावानुवाद इस प्रकार किया, "परमेश्वर के उस ज्ञान के कारण, जिसे वह और उसके साथी मसीही परमेश्वर के पवित्र-लोगों के सदस्य होने के कारण साझा रखते थे।"[16] इसका अनुवाद NIV करती है, "क्योंकि वह परमेश्वर के प्रति चैतन्य है," जो उसी विचार के निकट है। परमेश्वर की उस चेतना के साथ जिसे पतरस के पाठक साझा करते थे, कोई व्यक्ति जब वह अन्याय से दुःख उठाता हुआ क्लेश सहता है तो उसको कृपादृष्टि प्राप्त होती है।

आयत 20. जब पतरस ने अपना आलंकारिक प्रश्न **इस में क्या बड़ाई की बात है** पूछा, तो वह इससे पहले वाली आयत के विचार को आगे बढ़ा रहा था। "बड़ाई" और "कृपादृष्टि" समानान्तर हैं। "इस में क्या बड़ाई की बात है ... ?" और "इस में क्या कृपादृष्टि की बात है ... ?" बराबर ही हैं। प्रश्न स्वयं ही अपना उत्तर प्रदान करता है। इसमें बड़ाई की कोई बात नहीं है। इसी शब्द को NASB लूका 6:32 में "बड़ाई" अनुवाद किया गया है, "यदि तुम अपने प्रेम रखने वालों के साथ प्रेम रखो, तो तुम्हारी क्या बड़ाई?" और इसे 1 पतरस 2:19 में भी बड़ाई अनुवाद किया गया। यहाँ ऐसा कोई संकेत नहीं है कि परमेश्वर लेने-देने का कोई लेखा-जोखा रखता है, प्रत्येक भले और बुरे कार्य को दर्ज करके रखता है। वरन, पतरस का कहना था कि जब लोग, चाहे दास या कोई और, इसलिए दुःख उठाते हैं क्योंकि वह उनके लिए उचित है - चाहे वे **दुर्व्यवहार** को धैर्य से सहन करें - तो यह परमेश्वर को प्रसन्न नहीं करता है। परमेश्वर का आदर **पाप** से नहीं हो सकता है, चाहे उसका परिणाम जो भी हो।

पतरस ने विश्वासियों से सर्वोच्च नैतिक और नीति-संबंधित आचरण की माँग की, उन से भी जो निम्न कोटि के दास थे। मुद्दा यह नहीं था कि जो सताव कोई सह रहा है वह उसके लिए उचित है कि नहीं। मुद्दा था सही कार्य करना। पाप से परमेश्वर की कोई कृपादृष्टि प्राप्त नहीं होती है। परमेश्वर उस पर कृपादृष्टि करता है जिसने **सही किया है**, प्रभु का आज्ञाकारी रहा है, उसके लिए दुःख उठाया है, और फिर भी सब **धैर्य से सहन** करने का विश्वास रखा है। पतरस ने 2:20 का अन्त उसी शब्द के साथ किया जिससे उसने 2:19 का आरंभ किया था। **परमेश्वर**

से कृपादृष्टि [खारिस] परिणाम में आती है जब कोई "अन्याय से दुःख उठाता हुआ क्लेश सहता है" (2:19), और "परमेश्वर से कृपादृष्टि" परिणाम में आती है जब कोई "भला काम करके ... धीरज धरता हो।"

समर्पण के लिए निवेदन विश्वासियों के लिए अन्य महत्वपूर्ण बातों के लिए भी उपयोगी है। जब वे समर्पित होते हैं, तब मसीही एक शान्त तथा व्यवस्थित समाज के लिए योगदान करते हैं। अपनी आँखें "कृपा-दृष्टि के दिन" (2:12) पर लगाए हुए, वे यह पहचानते हैं कि वे संसार के शहरों के अस्थायी निवासी है। अधिकारियों के प्रति आदरपूर्ण समर्पण उनके अपने पड़ोसियों के साथ शान्ति से रहने में योगदान देगा, और इससे परमेश्वर की महिमा होगी। परन्तु, शासन के प्रति समर्पण वैसा समर्पण नहीं है जैसा कि दासों से अपेक्षित होता था। दासों के प्रति अनुचित और क्रूर व्यवहार सम्भव था। दण्ड चाहे उचित हो या अनुचित, दासों के लिए यह असामान्य नहीं था कि उनके साथ "कठोर बर्ताव" हो। पतरस ने जो क्रिया उपयोग की है वह है (κολαφίζω, *कोलाफीज़ो*), जो नए नियम और धर्म-निरपेक्ष साहित्य में बहुत ही कम प्रयोग किया जाने वाला शब्द है। महत्वपूर्ण बात है कि यीशु को क्रूस पर चढ़ाए जाने से पहले जो उनको मारा गया, यह शब्द उसके लिए भी प्रयुक्त हुआ है (मत्ती 26:67; मरकुस 14:65)। दास के साथ सरलता से दुर्व्यवहार का संभव होना, उसके निर्दोष होते हुए भी उसके लिए दुःख उठाना संभव होना, पतरस का ध्यान क्रूस की ओर ले गया।

यीशु का क्रूस पर समर्पित होना (2:21-25)

[21]और तुम इसी के लिये बुलाए भी गए हो, क्योंकि मसीह भी तुम्हारे लिये दुःख उठाकर तुम्हें एक आदर्श दे गया है कि तुम भी उसके पद-चिह्नों पर चलो। [22]न तो उसने पाप किया और न उसके मुँह से छल की कोई बात निकली। [23]वह गाली सुनकर गाली नहीं देता था, और दुःख उठाकर किसी को भी धमकी नहीं देता था, और पर अपने आप को सच्चे न्यायी के हाथ में सौंपता था। [24]वह आप ही हमारे पापों को अपनी देह पर लिये हुए क्रूस पर चढ़ गया, जिससे हम पापों के लिये मरकर धार्मिकता के लिये जीवन बिताएँ : उसी के मार खाने से तुम चंगे हुए। [25]क्योंकि तुम पहले भटकी हुई भेड़ों के समान थे, पर अब अपने प्राणों के रखवाले और अध्यक्ष के पास लौट आए हो।

दासों को स्वामियों की अधीनता में रहने का निर्देश, और यदि आवश्यक हो, तो अनुचित दुःख उठाना (2:18-20) यह नए नियम में मसीही शिक्षा के सबसे बहुमूल्य सिद्धांत की ओर ले जाता है, जो मसीह द्वारा औरों के लिए किए गए प्रायश्चित (2:21-25), पर दिए गए सबसे अच्छे वचनों में से एक है। जबकि पतरस ने इसके लिए कोई मत नहीं दिया कि क्रूस पर जो हुआ उस से कैसे परमेश्वर और मनुष्य के बीच मेल-मिलाप संभव हुआ, उसने यह स्पष्ट कर दिया कि यीशु अपनी मृत्यु में किसी प्रकार से मनुष्यों के पापों को उठा रहे थे।

आयत 21. पतरस ने पत्री में अनेक बार अपने पाठकों को उनकी बुलाहट को स्मरण करवाया। वे 2:9 में अन्धकार से ज्योति में बुलाए गए, 3:9 में वे श्राप के बदले आशीष देने के लिए बुलाए गए, 5:10 में वे अनन्त महिमा के लिए बुलाए गए। वे **इसी के लिए बुलाए गए**, उद्देश्य था कि वे सही करें और, मसीह के समान, धैर्य रखते हुए दुःख सहें (2:20)। इस स्थान पर आकर विषय के लिए दास गौण हैं; ये शब्द सभी मसीहियों के लिए हैं। अनुचित व्यवहार के समय समर्पण सहन योग्य हो जाता है जब यह स्मरण करते हैं कि **मसीह** ने भी अनुचित **सहा**। दास स्वामी से बढ़कर नहीं है। यदि मनुष्यों ने प्रभु के साथ अनुचित व्यवहार किया, वे उसके अनुयायियों के साथ भी अनुचित व्यवहार कर सकते हैं (मत्ती 10:24, 25)। अय्यूब का उलाहना था कि परमेश्वर मनुष्यों को जाँचने की स्थिति में नहीं है क्योंकि उसने स्वयं मनुष्य होने को कभी अनुभव नहीं किया है (अय्यूब 10:4-6)। जब यीशु मानव देह में आए, उन्होंने इस अभियोग को शान्त कर दिया।

ऐसा नहीं मसीह ने केवल दुःख उठाया। पतरस ने कहा कि उसने **तुम्हारे लिए** दुःख उठाया। पौलुस ने भी लिखा "मसीह तुम्हारे लिए मारा गया" (रोमियों 5:6; 1 कुरिन्थियों 15:3), जैसा कि इस पत्री में पतरस ने बाद में लिखा (3:18)। विश्वासी को मसीह की ओर आकर्षित करने और उसके उदाहरण का अनुसरण करने के लिए बाध्य करने वाली बातों में से एक है कृतज्ञता। जब मानवजाति पाप से दूषित और अज्ञानता में लिपटी हुई थी, तब अपनी दया में होकर परमेश्वर ने नासरत के यीशु में होकर अपनी सृष्टि की ओर हाथ बढ़ाया। क्रूस का सहना मनुष्यों के स्थान पर था। इस दावे की पुष्टि कि यीशु **तुम्हारे लिए आदर्श है** इस बात से है कि उसने "तुम्हारे लिए दुःख उठाया।" यीशु की मृत्यु को, उसे मात्र यह कहने के स्थान पर कि "वह तुम्हारे लिए मरा," उसका दुःख कहना, क्रूस की घटना को कालांतर पर और अधिक स्पष्ट कर देता है। पतरस ने उस दावे को जो मसीह अपने अनुयायियों के जीवनों पर रखता है स्पष्ट कर दिया। इस दावे की पुष्टि उस कृतज्ञता से होती है जो प्रेरित की अपेक्षा थी कि जागृत होगी।

सभी बातों में मसीही जीवन के लिए मसीह ही आदर्श है (मरकुस 8:34; यूहन्ना 13:15; फिलिप्पियों 2:5; 1 थिस्सलुनीकियों 1:6; इब्रानियों 12:2; 1 यूहन्ना 2:6)। अन्य बातों के साथ, उसका दुःख उठाना "आदर्श" है क्योंकि (1) उसने सही कार्य करने के लिए दुःख उठाया, और (2) उसने धैर्य के साथ सहन किया। सताव कभी सुखद नहीं होता है, परन्तु क्योंकि प्रभु ने दुःख उठाया, इसलिए उसके लोगों को भी उसके समान सहना है। वह अपने लोगों के लिए आदर्श है। एक अद्भुत कथन में, पौलुस ने लिखा, "अब मैं उन दुखों के कारण आनन्द करता हूं, जो तुम्हारे लिये उठाता हूं, और मसीह के क्लेशों की घटी ... अपने शरीर में पूरी किए देता हूं" (कुलुस्सियों 1:24)। प्रेरित का मानना था कि दुःख उठाना मसीह को प्रभु स्वीकार करने का एक अपेक्षित तथा आवश्यक परिणाम है।

पतरस ने भी समान बल देकर कहा कि मसीह भी विश्वासियों के लिए एक

आदर्श दे गया है कि वे भी **उसके पद-चिह्नों पर चलें**। पतरस ने यहाँ एक रोचक शब्द प्रयोग किया जिसका अनुवाद "आदर्श" (ὑπογραμμός, *हुपोग्राम्मोस)* किया गया है, और यह नए नियम में केवल यहीं मिलता है। इस शब्द का तात्पर्य है एक बच्चे के द्वारा बड़े अनाड़ीपन तथा यत्न के साथ अपनी पेंसिल के द्वारा अक्षरों की नकल उतारना। वह बच्चा जो बनाता वह *हुपोग्राम्मोस*, अर्थात प्रतिरूपित आकृति होती थी। पतरस की पत्री के बाद के दशकों में इस बात की और भी अधिक पुष्टि हो गई कि मसीही जीवन में सताव निहित है। पतरस द्वारा अपनी पत्री के लिखने के अर्ध-शताब्दी से भी कम समय में अन्ताकिया के इगनेशियस ने आग्रह किया, "हम प्रभु का अनुसरण करने वाले बनें, और इस बात के खोजी हों कि कौन और भी अधिक अनुचित, और अधिक निःसहाय होना, और अधिक तुच्छ होना सह सकता है।"[17]

आयत 22. प्रकटतः पतरस को इस बात की आवश्यकता अनुभव नहीं हुई कि वह अपने पाठकों को बताए कि वह भविष्यद्वक्ता को उद्धरण दे रहा है, यद्यपि शब्द **न तो उसने पाप किया** यशायाह 53:9 से हैं। यशायाह 53 परमेश्वर द्वारा आने वाले उद्धारकर्ता के लिए परमेश्वर द्वारा की गई प्रतिज्ञाओं के विषय मसीही समझ-बूझ के लिए आधारभूत है। कूश देश का खोजा यशायाह 53 से पढ़ रहा था (प्रेरितों 8:32, 33) जब फिलिप्पुस उसके रथ के साथ हो लिया, "और इसी शास्त्र से आरंभ कर के उसे यीशु का सुसमाचार सुनाया" (प्रेरितों 8:35)। संभवतः यह अध्याय मसीही चेतना में इतनी भली-भांति बस चुका था कि किसी हवाले को कहने की कोई आवश्यकता नहीं थी। न केवल नया नियम यीशु को मसीही जीवन का प्रतिरूप मानने के लिए निवेदन करता है, वरन वह इस बात की भी पुष्टि करता है कि उसका जीवन निर्दोष और निष्पाप था (यूहन्ना 8:29; 2 कुरिन्थियों 5:21; इब्रानियों 4:15; 1 यूहन्ना 3:5)। जैसा वह निष्पाप था, उसने अपने शिष्यों में भी इसी सिद्धता की माँग की (मत्ती 5:48)। सर्वोत्तम लोगों में भी, सिद्धता न होने पर भी, यीशु ने "तुम्हारे लिये दुःख उठाया" (2:21)। नए नियम में "पाप" ऐसा शब्द नहीं है जिसे हल्के में प्रयोग किया जाए। यह परमेश्वर का अपमान करता है और पापी पर अभिशाप लाता है।

यशायाह से लिया गया हवाला वार्तालाप के संबंध में यीशु के निष्पाप होने की ओर विशेषतः ध्यान आकर्षित करता है। इससे पहले प्रेरित ने अपने पाठकों से कहा था कि वे बैर-भाव और छल से दूर हो जाएं (2:1)। अब उसने यीशु के संबंध में कहा कि **न उसके मुँह से छल की कोई बात निकली**। दोनों ही स्थानों, 2:1 और यहाँ पर, उसी यूनानी शब्द का अनुवाद "छल" किया गया है। यशायाह से केवल इन्हीं शब्दों को उद्धरण देने के द्वारा, पतरस ने ध्यान आकर्षित किया कि बात-चीत हृदय की दशा बताती है। याकूब ने निर्भीक होकर कहा "जो कोई वचन में नहीं चूकता, वही तो सिद्ध मनुष्य है; और सारी देह पर भी लगाम लगा सकता है" (याकूब 3:2)। यीशु ने कहा था "क्योंकि तू अपनी बातों के कारण निर्दोष और अपनी बातों ही के कारण दोषी ठहराया जाएगा" (मत्ती 12:37)।

आयत 23. पतरस ने आगे कहा, **वह गाली सुनकर गाली नहीं देता था**। ये

शब्द सीधा उद्धरण तो नहीं थे परन्तु पतरस यशायाह से अपने विचार लेता रहा: "वह सताया गया, तौभी वह सहता रहा और अपना मुंह न खोला" (यशायाह 53:7)। भविष्यद्वक्ता के शब्द न केवल यीशु की निष्कपटता की पुष्टि करते हैं, वे उस की नम्रता और उसके विश्वास के बारे में भी बताते हैं। नया नियम भजन 22 और भजन 69 से भी यशायाह को और दृढ़ करने के लिए लेते हैं। मसीह को दुःख उठाने वाला उद्धारकर्ता होना था। (देखें मरकुस 15:34 भजन 22 के लिए और मरकुस 15:23 भजन 69 के लिए।) जब कोई गाली सुनकर गाली दे और बैर के बदले बैर दे, तो वह मसीह के उदाहरण का परित्याग और अपना नाश करता है। "गाली" देने का अर्थ है शब्दों द्वारा दुर्व्यवहार करना। यीशु के शत्रु, उसे क्रूस पर चढ़ाए जाने की यातना के समय उसे गाली देने में अति प्रचण्ड थे। मत्ती का विवरण स्पष्ट है: "उन्होंने उस के मुंह पर थूका, और उसे घूंसे मारे, औरों ने थप्पड़ मार के कहा, हे मसीह, हम से भविष्यद्वाणी कर के कह: कि किस ने तुझे मारा?" (मत्ती 26:67, 68)। पतरस ने यह अपने स्मरण के आधार पर कहा। जब यीशु को क्रूस पर चढ़ाया जा रहा था तब वह निकट ही था। उसने उसके हाथों में कीलों को ठोके जाते हुए देखा था और प्रभु पर लगाए गए लांछनों को सुना था। जब पतरस ने कहा कि यीशु ने अपने शत्रुओं के विरुद्ध बदला नहीं लिया तो यह कोई सुनी-सुनाई बात नहीं थी।

इस समय तक यह स्पष्ट है कि पतरस दासों को दिए जाने वाले निर्देशों से हट चुका था। यह आयत प्रेरित के सभी मसीही पाठकों को संबोधित है। उसने दासों को अपने स्वामियों के आधीन रहने के आग्रह से आरंभ किया था। वह इस संभावना से अनभिज्ञ नहीं था कि दासों के साथ अनुचित व्यवहार हो सकता है। यहाँ पर सताए जाने के विषय ने उसे और वृहत कर दिया था। न केवल दास वरन सभी विश्वासी, जब वे सताए जाएं, तो उन्हें प्रभु के सताए जाने के उदाहरण की ओर देखना है। उन्हें उसी प्रकार से बदला नहीं लेना था. यद्यपि प्राचीन लोगों के लिए बदला लेना सबसे पुराने नियमों में से एक था।

पलटा लेने के नियम, *lex talionis*, में न्याय निहित है, जिसे मूसा की व्यवस्था में इस प्रकार व्यक्त किया गया है: "परन्तु यदि उसको और कुछ हानि पहुँचे, तो प्राण के बदले प्राण का, और आँख के बदले आँख का, और दाँत के बदले दाँत का, और हाथ के बदले हाथ का, और पाँव के बदले पाँव का, और दाग के बदले दाग का, और घाव के बदले घाव का, और मार के बदले मार का दण्ड हो" (निर्गमन 21:23-25)। व्यवस्था तो यह कहती थी, परन्तु यीशु ने पलटा नहीं लिया; और उसके शिष्यों को भी नहीं लेना है। किसी के पास पलटा लेने का बल हो अथवा नहीं भी हो सकता है। इस बात का महत्व नहीं है। विशेषकर, विश्वासियों को गाली दिए जाने का पलटा नहीं लेना चाहिए। गाली के बदले गाली देने का अवसर हो सकता है, और उसमें कुछ न्याय भी हो सकता है। लेकिन मसीहियों को ऐसा करना ही नहीं है। वे यीशु के उदाहरण का अनुसरण करते हैं। **वह दुःख उठाकर किसी को भी धमकी नहीं देता था, और पर अपने आप को सच्चे न्यायी के हाथ में सौंपता था।**

पलटा लेने के स्थान पर, यीशु का उदाहरण विश्वास को दिखाता है। प्रेरित अपने पाठकों से न्याय के परित्याग की बात नहीं कर रहा था। वरन, उसने उन्हें निर्देश दिया कि न्याय को परमेश्वर पर छोड़ दें। उसे ही न्यायी होने दें। उन्हें यीशु के समान होना था, जो "अपने आप को सच्चे न्यायी के हाथ में सौंपता था।" कुछ राजनेताओं के लिए नियम है, "क्रोध मत करो, बस बदला ले लो।" राजा दाऊद के पास कुछ अवसर थे जब उसके सामने "बदला लेने" का प्रलोभन था। जब शाऊल उसके सामने धरती पर सोया हुआ पड़ा था और उस पर भाले का एक वार उचित पलटा होता, परन्तु दाऊद ने कहा "यहोवा न करे कि मैं अपने प्रभु से जो यहोवा का अभिषिक्त है ऐसा काम करूं, कि उस पर हाथ चलाऊं, क्योंकि वह यहोवा का अभिषिक्त है" (1 शमूएल 24:6)। दाऊद ने परमेश्वर पर भरोसा किया कि वह सही न्याय करेगा। पतरस का आश्वासन है कि परमेश्वर न्याय करेगा; वह "सच्चा न्यायी" है। जो निर्दोषों पर दोषारोपण करते हैं, निर्धनों से मुँह फेर लेते हैं, असहायों की स्थिति से लाभ उठाते हैं, उनके लिए एक न्यायी है। मसीही का कर्तव्य है कि अपना विश्वास बनाए रखे कि वह सही न्याय करेगा। "क्योंकि अवश्य है, कि हम सब का हाल मसीह के न्याय आसन के सामने खुल जाए, कि हर एक व्यक्ति अपने-अपने भले बुरे कामों का बदला जो उसने देह के द्वारा किए हों पाए" (2 कुरिन्थियों 5:10)।

आयत 24. प्रेरित के विचार मसीह के दुःखों के उदाहरण का अनुसरण करने से आगे, मनुष्यों के छुटकारे के लिए उसके निष्पाप दुःख भोगने के महत्व की ओर बढ़े। **वह आप ही हमारे पापों को अपनी देह पर लिये हुए क्रूस पर चढ़ गया।** यशायाह के शब्द इस के निकट हैं: "परन्तु वह हमारे ही अपराधों के कारण घायल किया गया, वह हमारे अधर्म के कामों के हेतु कुचला गया" (यशायाह 53:5)। हृदय को छू लेने वाले मसीही विश्वास के सबसे महत्वपूर्ण शिक्षाओं में से एक है प्रतिनिधि बनकर प्रायश्चित करना। पतरस ने इसे 3:18 में फिर से उठाया। मसीह ने सहनशीलता के साथ पापों का मूल्य चुकाने के लिए दुःख उठाया, मानव जाति के पापों को लिए हुए; परन्तु प्रायश्चित के रहस्य में सहनशीलता के साथ दुःख उठाने से भी बढ़कर कुछ सम्मिलित है। यीशु सक्रिय होकर अपने आप को परमेश्वर के हाथों में समर्पित कर रहे थे। परमेश्वर के न्याय की माँग है कि पाप का लेखा-जोखा हो। यीशु के जीवन और मृत्यु के द्वारा परमेश्वर के न्याय की पूर्ति किस प्रकार से हुई यह जानना परमेश्वर का काम है। हम उस ही की पुष्टि करते हैं जिसका खुलासा परमेश्वर ने किया है, अर्थात, पाप मानव जाति का विश्वव्यापी आचरण है (रोमियों 3:23), और जिन पापों की क्षमा नहीं होती है उनका प्रतिफल परमेश्वर से सदा काल का विच्छेदन है (रोमियों 6:23)। यीशु परमेश्वर के चुने हुए लोगों के पापों को **अपने घावों से** चंगा करता है।

NASB अपने पाठकों के साथ अन्याय करती है जब वह यूनानी शब्द ξύλον *(क्सुलों)* का अनुवाद "क्रूस" के रूप में करती है। अँग्रेज़ी में पेड़ों और उन से जो संबंधित हैं उनके लिए अनेक शब्द हैं। प्रत्येक का अपना ही अर्थभेद है।

शब्द जैसे कि "लकड़ी", "पेड़," "तख्ता," "काठ," "तखती," "जंगल," और "इमारती लकड़ी" आदि के मिलते-जुलते परन्तु भिन्न अर्थ होते हैं। अंग्रेज़ी के समान ही यूनानी में भी कई शब्द हैं जिनके अर्थ समान तो हैं परन्तु सटीक वह ही नहीं हैं। जीवित पेड़ के लिए यूनानी शब्द है δένδρον *(डेंड्रोन)*। क्रूस के लिए सही शब्द है σταυρός *(स्टौरोस)*। जब प्रभु के क्रूस चढ़ाए जाने का विषय होता है तो नए नियम में सामान्यतः σταυρός का प्रयोग होता है। इस आयत में जिस शब्द का अनुवाद "क्रूस" हुआ है उसका वास्तविक अर्थ है "काठ" या "पेड़।" कभी-कभी यह लकड़ी से बने डंडे (मत्ती 26:47) के लिए भी प्रयुक्त होता है, परन्तु जिस क्रूस पर यीशु की मृत्यु हुई उसे नए नियम में एक से अधिक बार "काठ" कहा गया है (*क्सुलों;* प्रेरितों 5:30; 10:39; 13:29)।

पतरस द्वारा इस शब्द का चुना जाना अनायास नहीं था। इसके द्वारा उसने एक महत्वपूर्ण बात कही। जैसे कि इस शब्द का अनुवाद डंडा भी हो सकता है, वैसे ही इसका अर्थ नुकीला खंबा या खंबा भी हो सकता है। मूसा की व्यवस्था में यदि कोई व्यक्ति जघन्य सामाजिक पाप करता था, तो वह मार डाला जाता था। उसके अपराध की गंभीरता को दिखाने के लिए, उसकी लोथ को नुकीले खंबे से बींधा जाकर प्रदर्शन पर लटका दिया जाता था (व्यवस्थाविवरण 21:22, 23)। इस प्रकार प्रदर्शन पर लटकाया गया मनुष्य शापित माना जाता था। यहोशू 10:26, 27 यह स्पष्ट कर देता है कि वह नुकीला खंबा मृत्यु का कारण नहीं होता था; मृतक व्यक्ति को उस काठ पर लटका कर यह घोषित किया जाता था कि जो वह था और जो उसने किया था उसके कारण वह शापित था।

पौलुस ने विशेषकर व्यवस्था में व्यवस्थाविवरण 21:22, 23 और क्रूस पर यीशु की मृत्यु के संबंध को दिखाया: "मसीह ने जो हमारे लिये शापित बना, हमें मोल ले कर व्यवस्था के श्राप से छुड़ाया क्योंकि लिखा है, 'जो कोई काठ पर लटकाया जाता है वह शापित है'" (गलतियों 3:13)। जिस शब्द को NASB 1 पतरस 2:24 में "क्रूस" अनुवाद करती है उसे ही गलतियों 3:13 में "काठ" अनुवाद किया गया है। पतरस ने "काठ" शब्द उस ही कारण से चुना जिस कारण से पौलुस ने चुना था। यह स्मरण दिलाने के लिए था कि यीशु तुच्छ, तिरस्कार किया हुआ, परमेश्वर से शापित था जब वह क्रूस पर टंगा हुआ था। जब प्रारंभिक मसीही क्रूस को "काठ" सुनते थे, तो उनके सामने क्रूस के अर्थ का चित्र उभरता था। यीशु जो निष्पाप और परमेश्वर का प्रिय पुत्र था, उसने क्रूस पर लटक कर वह श्राप सह लिया जो मनुष्यों के लिए उनके पाप के कारण का उचित। उसके शापित होने का अर्थ था कि वे पाप से स्वतंत्रता और जीवन के लिए आशा का आनन्द ले सकते थे।

इस पूरी पत्री में पतरस बपतिस्मा की भाषा के निकट बना रहा। इस पद तथा रोमियों 6:2-4 में विलक्षण समानता है। पौलुस ने पूछा, "हम जब पाप के लिये मर गए तो फिर आगे को उस में क्योंकर जीवन बिताएं?" (रोमियों 6:2); पतरस ने लिखा **जिससे हम पापों के लिये मरकर**। पौलुस ने कहा कि मसीही बपतिस्मा का परिणाम है "हम भी नए जीवन की सी चाल चलें" (रोमियों 6:4);

पतरस ने लिखा "जिससे हम . . ." **धार्मिकता के लिये जीवन बिताएँ**। जब एक विश्वासी मसीह के साथ बपतिस्मा में गाड़ा जाता है वह पाप के लिए गड़ जाता है। कॉमेन्ट्रियाँ सामान्यतः रोमियों 6:2-4 और 1 पतरस के इस खण्ड में समानान्तर तो देखती हैं; परन्तु यह आश्चर्यजनक है कि कितनी ही बार उनकी चर्चा में बपतिस्मा का कोई उल्लेख नहीं होता है। जिस शब्द को 1 पतरस में "मरकर" अनुवाद किया गया है वह क्रिया ἀπογίνομαι *(अपोगिनोमाई)* का सामान्य भूत कृदंत है, और पौलुस द्वारा प्रयुक्त शब्द से कोमल है। नए नियम में यह शब्द केवल यहीं प्रयोग किया गया है, और इसका तात्पर्य है "उतार देना" या "कोई संबंध नहीं रखना" है। अनुवाद "जिससे कि, पाप को अपने पीछे छोड़ने के बाद, हम धार्मिकता के लिए जीएं" पतरस के शब्दों के साथ न्याय करता है। बपतिस्मा की भाषा स्पष्ट है। पतरस अपने पाठकों के समक्ष यीशु को प्रभु ग्रहण करने के नैतिक और आचरण संबंधी सभी आयामों को रखने से कभी नहीं चूका। जब उन्होंने मसीह में बपतिस्मा लिया तब उन्होंने पाप को सदा के लिए अपने पीछे छोड़ दिया। मसीह में जीवन धार्मिकता माँगता है।

आयत 25. पूरे 2:21-25 में, कभी भी यशायाह 53 पृष्ठभूमि में कुछ अधिक दूरी पर नहीं रहा है। फिर भी, 2:24 के अन्तिम शब्दों, "उसी के मार खाने से तुम चंगे हुए" और इस आयत के आरंभिक शब्दों में यशायाह स्पष्ट बोल रहा है: "उसके कोड़े खाने से हम चंगे हो जाएं। हम तो सब के सब भेड़ों की नाईं भटक गए थे; हम में से हर एक ने अपना-अपना मार्ग लिया" (यशायाह 53:5, 6)। **क्योंकि तुम पहले भटकी हुई भेड़ों के समान थे** वही सैद्धांतिक पुष्टि है जो पौलुस ने की थी। उसने लिखा, "इसलिये कि सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं" (रोमियों 3:23)। अनुवाद "भटकी हुई भेड़ों" यूनानी कृदंत का वर्तमान काल है।[18] यीशु ने मनुष्यों के पाप उठा लिए। मनुष्य, अपने आप से, सदा ही परमेश्वर से भटकते रहे हैं, बलवे और पाप में खोते रहे हैं।

जब प्रेरित ने कहा, **पर अब लौट आए हो**, उसने अपने पाठकों से अपने परिवर्तित होने के समय को स्मरण करने को कहा। जिस शब्द का अनुवाद "लौट आए" ἐπιστρέφω *(एपिस्ट्रेफ़ो)* हुआ है वह वही है जिसे पतरस ने वर्षों पहले यरूशलेम में प्रभु के स्वर्गारोहण के बाद के सप्ताहों में प्रयोग किया था। उसने तथा यूहन्ना ने यरूशलेम के मन्दिर के आंगन में एक लंगड़े को चंगा किया ही था। वहाँ सुलैमान के ओसारे में भीड़ एकत्रित हो गई और उसने उन्हें प्रचार करते हुए अनुरोध किया, "मन फिराओ और लौट आओ कि तुम्हारे पाप मिटाए जाएं, जिस से प्रभु के सम्मुख से विश्रान्ति के दिन आएं" (प्रेरितों 3:19)। जो शब्द प्रेरितों 3:19 में "लौट आओ" अनुवाद हुआ है वही इस आयत में भी "लौट आए" अनुवाद हुआ है। जब मसीही जन अपने विश्वास में दुर्बल होकर अपनी दिशा से भटक जाते हैं, उनके लिए उस प्रेम और कृतज्ञता को स्मरण करना जिससे उनके हृदय भर गए थे जब उन्होंने बपतिस्मा में प्रभु को पहन लिया था, लाभप्रद होता है। निराश और अस्थिर हुए मसीहियों को संबोधित करते हुए, इब्रानियों के लेखक ने कहा, "परन्तु उन पहिले दिनों को स्मरण करो, जिन में तुम ज्योति पाकर दुखों के

बड़े संघर्ष में स्थिर रहे" (इब्रानियों 10:32)। पतरस के पाठक भी "दुखों के बड़े संघर्ष" को झेल रहे थे क्योंकि उन्होंने मसीह को ग्रहण किया था। प्रेरित ने लिखा, तुम "भटकी हुई भेड़ों" के समान थे, "परन्तु अब लौट आए हो।"

बाइबल के पृष्ठों में भेड़ का चित्रण बारंबार हुआ है। भेड़ें विनीत और असहाय होती हैं, उन्हें मार्गदर्शक और रक्षक की आवश्यकता होती है। भेड़ों के समान लोग भी दुर्घटनाओं, बीमारियों, और मृत्यु के समयों में अपने आप को असहाय अनुभव करते हैं। यद्यपि वे कभी-कभी एक घमण्ड और आत्मनिर्भरता प्रदर्शित करते हैं, परन्तु पुनर्विचार से नम्रता और आज्ञाकारिता आती है। अन्यजातियों से आने वाले मसीहियों ने, जिन्हें पतरस ने संबोधित किया, संभवतः भेड़ों के समान रखवालों द्वारा देखभाल का व्यक्तिगत अनुभव कभी नहीं किया था जैसा कि इस्राएल में आम था, परन्तु आरंभ से ही अन्यजातियों से परिवर्तित होने वालों ने इस्राएल की भाषा सीख ली थी। पुराना नियम मसीही पुस्तक थी। पतरस के पाठकों के लिए समानता प्रगट थी, "तुम पहले भटकी हुई भेड़ों के समान थे, पर अब लौट आए हो।"

बाद में पतरस ने कलीसिया के अगुवों को दोनों "रखवाले" और "रक्षक" कहा (5:1-3)। शब्दों की अविरलता अंग्रेज़ी अनुवादों में उतनी स्पष्ट नहीं है जितनी यूनानी में है। जिस शब्द को 5:2 में "रखवाले" अनुवाद किया गया है वह **चरवाहे** (ποιμήν, *पोईमें)* शब्द का क्रिया रूप है जिसे यहाँ यीशु के लिए उपयोग किया गया है। शब्द "रखवाली" शब्द **अध्यक्ष** (ἐπίσκοπος, *एपिस्कोपोस)* का क्रिया रूप है। शब्द "अध्यक्ष" का अनुवाद "बिशप" (KJV) और "ओवरसीअर/निरीक्षक" (NIV) भी हुआ है। कुछ सीमा तक कलीसियाओं में अगुवे उसी के समान कार्य करते हैं जैसा कि यीशु विश्वव्यापी कलीसिया का सिर होकर करता है। जब मसीही सताव का सामना करते हैं तो वे इस निश्चितता में साहस पाते हैं कि जो उनकी देखभाल और मार्गदर्शन करता है, उनका "रखवाला और रक्षक," वह उन्हें सभी में से निकालता ले चलेगा। वास्तव में उनके सताव उनके प्रधान रखवाले के प्रगट होने के दिन को और निकट ला रहे हैं (4:17-19; 5:4)।

अनुप्रयोग

अधीन रहो; ईश्वरीय जीवन जीओ (2:13-25)

यह जानना कठिन है कि कौन सा विचार हमें अधिक परेशान करता है: समर्पण या अधिकार रखना। प्रथम शताब्दी के अन्तिम समयों के यहूदी इतिहासकार जोसफस ने, शीघ्र ही सम्राट बनने जा रहे वेस्पेसियन का वर्णन इन शब्दों में दिया कि वह ऐसा मनुष्य है जो अधिकारी होना भी जानता है और अधिकार के आधीन रहना भी।[19] निर्देश देना भी जानना और निर्देश लेना भी, अधिकारी होना भी और अधिकार के आधीन होना भी, जीवन से कितना अधिक संबंधित है।

प्रेरित अपने पाठकों को बताना चाहता था कि समर्पित रहना मसीही जीवन

का अभिन्न अंग है। कलीसिया के अन्दर, मसीहियों को पहले मसीह के प्रति समर्पित रहना है, फिर ईश्वरीय अगुवों के जो परमेश्वर के लोगों की देखभाल करते हैं। व्यापक समाज में, उन्हें अपने देश के नियमों के आधीन होना है, चाहे उन नियमों में कुछ ऐसे हों जो जैसे वे चाहते हैं वैसे नहीं हैं। यदि घर और कार्य स्थल को भली-भांति काम करना है, तो उत्तरदायित्वों का कुछ बंटवारा होना चाहिए। भली-भांति कार्य करने के लिए किसी भी समूह के लोगों को नेतृत्व चाहिए होता है। नेतृत्व के प्रभावी होने के लिए, समर्पण अनिवार्य है। समर्पण का अर्थ अधिकारियों के समक्ष भय के कारण पसर जाना नहीं है। परन्तु इसमें व्यवस्था एवं उन्नति के लिए अपनी पसंद को तज देने की नम्रता आवश्यक होती है।

यीशु के लिए अनुपम दावा (2:24, 25)

मानव जाति के लिए विश्वव्यापी संदेश हो ही नहीं सकता यदि मानव इतिहास में कोई एकमात्र अनुपम घटना घटित न हुई हो। मसीही अंगीकार इससे बहुत बढ़कर है कि यीशु सबसे बुद्धिमान शिक्षक थे। दावा यह है कि वे सदेह परमेश्वर के पुत्र थे। केवल वे ही हमारे पापों के लिए प्राण दे सकते थे (2:24, 25)। केवल वे ही मृतकों में से जी उठे और परमेश्वर के दाहिने हाथ शासन में हैं। केवल वे ही दोबारा आने वाले हैं। संसार के अन्य धर्मों में मसीही संदेश के समान कुछ भी नहीं है। मसीही विश्वास अनेक धार्मिक संभावनाओं में एक नहीं है। मनुष्यों के उद्धार के लिए और कोई दूसरा नाम है ही नहीं (प्रेरितों 4:12; देखें यूहन्ना 14:6)। ". . . यीशु का इनकार करने का अर्थ है मिशन की नस को काट देना और उसे व्यर्थ बना देना। दूसरी ओर, उसके अनुपम होने को स्वीकार करना, यह स्वीकार करना है कि उसे सारे विश्व पर प्रगट करना कितना अत्यावश्यक है।"[20]

समाप्ति नोट्स

[1]आई. एन. कारमन, "हियर वी आर बट स्ट्रेइंग पिलग्रिमस," *सॉन्गस ऑफ दि चर्च,* कम्पोजीशन एण्ड एडिटिंग. एल्टोन एच. होवर्ड (वेस्ट मोनरो, लॉस एंगेल्स: होवर्ड पबलिशिंग कम्प., 1977)। [2]चार्ल्स एच. एच. स्कोबी, *दि वेज ऑफ़ अवर गॉडः एन अपरोच टू बिबलिकल थियोलोजी* (ग्रैंड रेपिडस, मिशी.: विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 2003), 506. [3]उदाहरण के लिए पौलुस ने लिखा, "मैं तो तरसुस का यहूदी मनुष्य हूं! किलिकिया के प्रसिद्ध नगर का निवासी हूं" (प्रेरितों के काम 21:39)। [4]जे. रमसे मिकाएल, *1 पीटर,* वर्ड बिबलिकल कमैंट्री, वाल. 49 (वाको, टेक्सास: वर्ड बुक्स, 1988), 114. [5]शब्द "प्रगटीकरण" (ἐπισκοπή, *इपिस्कोपे)* उसी मूल शब्द से है जो "सेवक" या "बिशप" (ἐπίσκοπος, *इपिस्कोपोस)* के लिए अनुवाद किया गया है। 1 तीमुथियुस 3:1 *इपिस्कोपोस* सेवक की पदवी को दर्शाता है और प्रेरितों के काम 1:20 में प्रेरित की पदवी को। [6]रोमियों ने ई.पू. 509 में अपने अन्तिम राजा, घमंडी टार्क्विन, को निष्कासित कर दिया था। इसके साथ रोमी गणराज्य का जन्म हुआ। उच्च कोटि के रोमी नागरिक इस विचार से भी घृणा करते थे कि किसी दिन कोई राजा रोम पर पुनः शासन करेगा। नए नियम के काल में, रोम इस कल्पना में जी रहा था कि गणराज्य अभी विद्यमान है। सैद्धांतिक रीति से,

सम्राट मात्र एक "प्रथम नागरिक" था। वस्तुस्थिति यह थी कि सम्राट सेना का नियंत्रक था और इस कारण उसके पास शक्ति थी। [7]पाँच स्थानों के नाम जो 1:1 में दिए गए हैं चार प्रांतों का प्रतिनिधित्व करते हैं। (देखिए, *परिचय*, पृष्ठ 9-14.) [8]यह रोचक है कि NASB ने पुलिंग विशेषण *πάντας (पांटास)* का अनुवाद लिंग सूचक न होने वाले वाक्यांश "सभी लोगों" किया है। विशेषण का मूल अर्थ है "सभी पुरुषों" जैसा कि KJV में दिया है। NRSV तथा NIV ने लिंगों को सम्मिलित करने वाली भाषा को अनेकों शब्दों तथा वाक्यांशों पर लागू किया है। "भाइयों" के लिए यूनानी शब्द का अनुवाद "भाइयों और बहनों" किया है, "पुरुषों" के लिए शब्द का अनुवाद "लोगों" हुआ है, आदि। NASB का "सभी लोगों" प्रयोग करना दिखाता है कि इतना रूढ़िवादी अनुवाद भी इस बात के प्रति कोई चिंता नहीं दिखाता है कि यूनानी और इब्रानी भाषाओं में पुलिंग शब्द दोनों लिंगों को दिखाने के लिए प्रयुक्त होते हैं। कोई यह तर्क दे सकता है कि अंग्रेज़ी भाषा में भी यही किया गया है। पूर्व काल में अंग्रेज़ी का पुलिंग "वह" का अर्थ, उसके संदर्भानुसार, स्त्री या पुरुष रहा है, और "पुरुष" का अर्थ "लोग" रहा है। प्रश्न यह नहीं है कि क्या यूनानी पुलिंग शब्दों का लिंग सूचक न होने वाले रूप में अनुवाद किया जाना उपयुक्त है। यहाँ NASB दिखाती है कि यह उपयुक्त है। प्रश्न यह है कि क्या अनुवादकों को प्राचीन अभिव्यक्तियों के माध्यमों को आज की पश्चिमी संस्कृति की लिंग भेद न करने की राजनैतिक माँग को किस सीमा तक स्थान देना चाहिए। [9]"अंगीकार" से हमारा तात्पर्य केवल एक मौखिक कथन से बढ़कर है। अंगीकार से हमारा तात्पर्य उसके साथ जुड़ी प्रत्येक अभिव्यक्ति यानी विश्वास, प्रेम, नया जन्म, आज्ञाकारिता इत्यादि से है। [10]स्कोबी, 847.

[11]तकनीकी रूप से पतरस ने यहाँ कृदंत ("आधीन रहो") प्रयोग किया है न कि आदेशसूचक ("अधीन रहो") जैसा उसने 2:13 में किया, संदर्भ दिखाता है कि अर्थ में कोई भिन्नता नहीं है। पतरस द्वारा अनिवार्य के बल के साथ कृदंतों का प्रयोग विद्वानों द्वारा बहुत चर्चा का विषय रहा है। [12]देखें माईकल्स, 138. [13]उदाहरण के लिए देखें, वेएन ए. ग्रूडम, *द फर्स्ट एपिस्ल ऑफ पीटर: ऐन इन्ट्रोडकशन एण्ड कॉमेन्ट्री*, टिन्डेल न्यू टेस्टमेन्ट कॉमेन्ट्रीस, वॉल्यूम 17 (ग्रैन्ड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैन्स पबलिशिंग को., 1988), 124. [14]एक अच्छे अध्ययन के लिए, देखें रिचर्ड ए. हॉर्सली, "द स्लेव सिस्टम ऑफ क्लासिकल एन्टिक्विटी एण्ड देयर रिलकटेंट रिकोगनिशन बाए मॉडर्न स्कौलर्स," *सेमिआ* 83/84 (1998): 19-66. [15]देखें इब्रानियों 10:2 जहाँ एक समानन्तर वाक्यांश का अनुवाद "उन का विवेक उन्हें पापी न ठहराता" किया गया है। देखें वॉल्टर बाऊर, *ए ग्रीक - लेक्सिकौन ऑफ द न्यू टेस्टमेन्ट एण्ड अदर क्रिश्चियन लिट्रेचर*, तीसरा संस्करण, एण्ड एड. फ्रैड्रिक विलियम डैंकर (शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रेस, 2000), 967. [16]जे. एन. डी. केली, *ए कमेन्ट्री ऑन द एपिसल्स ऑफ पीटर एण्ड जूड*, ब्लैक्स न्यू टेस्टमेन्ट कमेन्ट्रीस (लंडन: एडम एण्ड चार्ल्स बलैक, 1969), 117. [17]इगनेशियस *इफिशियन्स* 10.3. [18]अंग्रेज़ी शब्द "planet" (ग्रह) यूनानी शब्द *πλανάω (प्लानाओ)* का सजातीय है, उसका अर्थ होता है "भटकना।" प्राचीनों ने ध्यान किया कि एक स्थान पर स्थिर सितारों के मध्य ग्रह घूमते या भटकते रहते थे (देखें यहूदा 13 की टिप्पणी) । वे बहुधा ग्रहों के साथ देवी-देवताओं को जोड़ते थे। [19]जोसफस *वार्स* 4.10.2. [20]जॉन स्टॉट, *द कन्टेम्पररी क्रिश्चियन* (लेइसेस्टर, यू.के.: इन्टरवर्सिटी प्रेस, 1992), 316.